श्री नन्दीश्वर द्वीप विधान

आशीर्वाद एवं संपादन

आर्ष मार्ग संरक्षक, कविहृदय, प्रज्ञायोगी

दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचयित्री

आर्यिका आस्थाश्री माताजी

प्रकाशक

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

धर्मतीर्थ मार्ग, कचनेर अतिशय क्षेत्र के पास

तालुका, जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

www.jainacharyaguptinandiji.org

E-mail : dharamrajshree@gmail.com

पुस्तक का नाम	:	श्री नन्दीश्वर द्वीप विधान
आशीर्वाद	:	गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव
	:	वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव
आशीर्वाद एवं संपादन	:	प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव
रचनाकार	:	आगमस्वरा आर्यिका आस्थाश्री माताजी
संघस्थ	:	मुनि श्री विमलगुप्तजी, मुनि श्री विनयगुप्तजी क्षु. श्री धर्मगुप्तजी, क्षु. श्री शांतिगुप्तजी क्षु. धन्यश्री माताजी, क्षु. तीर्थश्री माताजी, ब्र. केशर अम्माजी
सर्वाधिकार सुरक्षित	:	रचनाकाराधीन
प्रकाशन वर्ष	:	2020
संस्करण	:	तृतीय 2021
प्रकाशक	:	श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) Email : dharamrajshree@gmail.com
प्राप्ति स्थान		1. प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ 2. श्री धर्मतीर्थ, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) 9421503332 3. श्री नितिन नखाते, नागपुर, 9422147288 4. श्री राजेश जैन (केबल वाले), नागपुर 9422816770 5. श्री रमणलाल साहू जी, औरंगाबाद मो. 9823182922 6. श्री सुबोध जैन, राधेपुरी, दिल्ली 9910582687
मुद्रक	:	राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर 9829050791 Email : rajugraphicart@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृ.नं.
1.	आशीर्वाद	ग.ग. कुंथुसागरजी	4
2.	शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें	वैज्ञानिक आचार्य कनकनंदीजी	4
3.	आशीर्वचन	आचार्य गुप्तिनंदीजी	5
4.	नंदीश्वर द्वीप की महिमा	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	6
5.	श्री अष्टाह्निका (नन्दीश्वर) व्रत कथा		9
6.	विनय पाठ		13
7.	पूजा प्रारम्भ		14
8.	विधान का मण्डल		19
9.	ऋद्धि मंत्र		20
10.	श्री नन्दीश्वर विधान		21
11.	नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिश जिनालय पूजा		27
12.	नन्दीश्वर द्वीप आग्नेय दिश जिनालय पूजा		33
13.	नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिश जिनालय पूजा		38
14.	नन्दीश्वर द्वीप नैऋत्य दिश जिनालय पूजा		44
15.	नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिश जिनालय पूजा		49
16.	नन्दीश्वर द्वीप वायव्य दिश जिनालय पूजा		54
17.	नन्दीश्वर द्वीप उत्तर दिश जिनालय पूजा		59
18.	नन्दीश्वर द्वीप ईशान दिश जिनालय पूजा		64
19.	समुच्चय जयमाला		70
20.	प्रशस्ति		72
21.	आरती		73
22.	समुच्चय अर्घ		74
23.	शांतिपाठ, विसर्जन पाठ		75–76

आशीर्वाद

प्रसन्नता इस बात की है कि **आर्यिकाश्री आस्थाश्री माताजी** द्वारा नन्दीश्वर विधान की रचना की गई है। विधान करने से महापुण्य बंधता है, कर्मों की निर्जरा होती है, माताजी ने यह कार्य बहुत ही अच्छा किया है। आगे और भी इसी तरह रचना करती रहें, आपका क्षयोपशम ज्ञान बढ़ता रहे, ऐसा मेरा आशीर्वाद है।

– ग.ग. आचार्य कुन्थुसागर

शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें

(तर्ज : चौपाई : संघ सहित.... कन्नड संस्कृतनिष्ठ)

वन्दे तीर्थेश्वर ज्ञान नयनम्, सच्चिदानन्द हे पूर्ण कामम्।
दिव्य ज्योति हे ! चतुराननम्, अनन्तवीर्य केवल धामम्॥1॥
सापेक्षवादी हे ! अनन्तज्ञाता, अनन्त संसार तारणकर्त्ता।
अनन्त चतुष्टय धारणकर्ता, जिनवाणी के तुम हो भर्त्ता॥2॥
ज्ञान विज्ञान के तुम हो विधाता, मोक्षमार्ग के प्रेरणा दाता।
भव्य सरोज के विकास कर्त्ता, विश्वशान्ति के हे उपदेष्टा॥3॥
वीतराग हो हे ! समदर्शी, महर्षियों के तुम ही महर्षि।
शतेन्द्र पूजित अनन्तदर्शी, कमले विराजित हो अस्पर्शी॥4॥
ध्याता तुम्हीं हो हे ! ज्ञानज्ञाता, हे आत्मनन्दी हो ज्ञानदाता।
सत्य सनातन चिन्मय रूपा, दिव्य ध्वनीश्वर भव्य प्रचेता॥5॥
जिनेश, महेश, शुद्ध स्वरूपा, अनन्त गुणधारी विश्वरूपा।
'कनकनन्दी' के ध्यान स्वरूपा, तुम सम हो मम् भावी रूपा॥6॥

दोहा– वन्दे तद्गुण लब्धये, भाव से करे स्मरण।
वही भव्य भगवान् बने, करे जो आत्म रमण॥4॥

हमारे संघ की **श्रमणी आस्थाश्री** जब हमारे पास थी उस समय भी भजन आदि गाती थी। अभी तो कवियत्री बनकर कविता, विधान आदि की रचना करने लगी हैं। माताजी की यह क्षमता और भी विकसित हो मेरा ऐसा शुभाशीर्वाद है।

माताजी द्वारा रचित 'नन्दीश्वर विधान' 'स्व–पर–विश्वकल्याणकारी बने' ऐसी मंगल कामना है। माताजी आत्म कल्याण करते हुए विश्वकल्याण करे ऐसा शुभाशीर्वाद सहित मंगल कामनाओं के साथ

–आचार्य कनकनन्दी, हल्दीघाटी (राजसमन्द)

आशीर्वचन

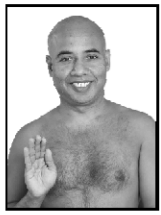

दोहा

जम्बुद्वीप से आठवाँ नन्दीश्वर हितकार।
उसके सब जिनबिम्ब को वन्दन बारम्बार।।

संघ में 'श्री तिलोय पण्णत्ति ग्रन्थराज'' का स्वाध्याय चल रहा है उसमें मध्यलोक के आठवें नन्दीश्वर द्वीप का विस्तृत वर्णन पढ़ा। पढ़कर मन में अत्यानंद हुआ। उस समय ही **आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने उनके द्वारा सृजित नंदीश्वर विधान की नवीन रचना अवलोकनार्थ दी। उसमें तिलोय पण्णत्ति को आधार लेकर माताजी ने 'नन्दीश्वर विधान' में नंदीश्वर द्वीप का, वहाँ–वहाँ के वैभव और पूजा विधि का बहुत सुन्दर वर्णन किया है। नंदीश्वर व्रत कथा से इस व्रत विधान की महिमा ज्ञात होती है। व्रत कथा के अनुसार कुबेर दत्त वैश्य और सुन्दरी सेठानी के पुत्र श्रीवर्मा ने नन्दीश्वर व्रत का विधिवत पालन किया। जिसके प्रभाव से वे स्वर्गादिक सुख भोगकर आगे हरिषेण चक्रवर्ती बने तथा उसी भव में पुनः व्रतकर आगे मुनि बने वा मोक्ष गये। व्रत के प्रभाव से अनंत वीर्य आगे चक्रवर्ती बना। जयकुमार सेनापति भगवान वृषभदेव के 72वें गणधर बने। इस व्रत की महिमा से कोटिभट् श्रीपाल का कोढ़ मिटा तथा आगे सर्वसुखों के साथ मोक्ष सुख भी प्राप्त हुआ। इत्यादि अनेक उदाहरण प्रथमानुयोग ग्रन्थों में इस व्रत की महिमा बतलाते हैं। प्रस्तुत विधान में 52 अर्घ और 8 पूर्णार्घ हैं। माताजी ने अनेक छन्दों का प्रयोग करते हुए बहुत ही सुन्दर विधान बनाया है। उन्हें मोक्ष सिद्धी का विशेष आशीर्वाद है। ग्रन्थ प्रकाशन के पुण्यार्जक, प्रकाशक, मुद्रक, पूजक, पाठक आदि सभी को हमारा शुभाशीर्वाद।

–आचार्य गुप्तिनंदी

नंदीश्वर द्वीप की महिमा

इस ढ़ाई द्वीप के अंदर दो समुद्र और ढ़ाई द्वीप हैं तथा इस मध्यलोक में असंख्यात द्वीप समुद्र हैं। सभी जगह जिन चैत्यालय नहीं है। वैसे मध्यलोक में अकृत्रिम चैत्यालय 458 बताये हैं। किसी द्वीप में अकृत्रिम चैत्यालय हैं और किसी द्वीप में नहीं है। किसी द्वीप में अधिक चैत्यालय हैं, किसी द्वीप में कम संख्या में है।

मध्यलोक के द्वीपों में सबसे अधिक पूजा-पाठ का महत्त्व नंदीश्वर द्वीप का है। इस नंदीश्वर द्वीप में भगवान की पूजा-अर्चा करने चारों निकाय के देव अष्टाह्निका पर्व के समय में आते हैं। वर्ष में तीन बार सौधर्म आदि इन्द्रगण अपने परिवार देवों के साथ वहाँ महापूजा करते हैं। वे चारों दिशाओं में पूजा करते हैं। अलग-अलग समय पर अलग-अलग देवगण पूजा करते हैं। 24 घंटे अखंड रूप से वहाँ पूजा होती है।

कार्तिक, फाल्गुन, आषाढ़ मास में अष्टाह्निका पर्व आता है। तीनों मास की शुक्ल पक्ष की अष्टमी से पूर्णिमा तक अष्टाह्निका मनाई जाती है। आठ दिन की अष्टाह्निका होती है।

इस नंदीश्वर द्वीप में 52 चैत्यालय हैं। हर एक चैत्यालय में 108, 108 जिन प्रतिमायें होती हैं, नाना रत्नों की ये जिन प्रतिमायें 500 धनुष ऊँची होती है। चारों दिशाओं में 13-13 चैत्यालय होते हैं और 13+13+13+13=52 चैत्यालय होते हैं।

एक-एक दिशा में एक अञ्जनगिरि, चार दधिमुख, आठ रतिकर होते हैं। इन्हीं के ऊपर 13 चैत्यालय होते हैं। चारों दिशाओं में एक-एक वापिका है, प्रत्येक दिशा में एक-एक वन है। इस प्रकार एक दिशा में एक अञ्जनगिरि की चार वापिकाओं सम्बन्धी 16 वन है। चारों दिशाओं के 64 वन है और प्रत्येक वन में एक-एक प्रासाद है।

देवगण-नाना प्रकार के फल, फूलों को लेकर अपने-अपने वाहन पर आरुढ़ होकर पूजा करने जाते हैं।

मनुष्य, विद्याधर और चारण ऋद्धिधारी मुनिराज ढ़ाई द्वीप से बाहर इस नंदीश्वर द्वीप में नहीं जा सकते हैं। इसलिये हम सभी यहीं से परोक्ष रूप में उस नंदीश्वर द्वीप के चैत्यालय की द्रव्य और भाव से महार्चना करते हैं। जिनालयों में इसलिये नंदीश्वर भगवान की चौमुखी प्रतिमा विराजमान की जाती है।

मुनिराज नंदीश्वर भक्ति पढ़ते हैं और श्रावकगण नंदीश्वर द्वीप की पूजा, विधान आदि करके पुण्य का संचय करते हैं।

यह नंदीश्वर विधान 'तिलोयपण्णत्ति' के आधार से लिखा है। नंदीश्वर द्वीप के विषय में अधिक विस्तार से जानने के लिये 'तिलोयपण्णत्ति' का अध्ययन करें। ये 'तिलोयपण्णत्ति' यतिवृषाचार्य के द्वारा लिखा हुआ है। नंदीश्वर द्वीप का वर्णन 'तिलोयपण्णत्ति' के तीसरे भाग में है। वहाँ से पढ़ें और नंदीश्वर द्वीप की लम्बाई विस्तार आदि जाने।

वहाँ पे जो अञ्जनगिरि है वह इन्द्र नीलमणि के समान है। दधिमुख– दही के समान है। रतिकर– स्वर्ण के समान है।

सबसे अधिक पूजा इस नंदीश्वर द्वीप में होती है, एक बार ही नहीं। आचार्य कहते हैं कि वर्ष में तीन बार महार्चना होती है।

मैंने जब 'तिलोयपण्णत्ति' के तीसरे भाग में नंदीश्वर द्वीप की महिमा पढ़ी। उसमें देवों के द्वारा जो पूजा पढ़ी तो मेरे भाव विधान बनाने में लगे। पंचमेरु का विधान लिखा तब से नंदीश्वर विधान बनाने की इच्छा थी। जब हरिवंशपुराण का स्वाध्याय किया उसमें भी नंदीश्वर द्वीप का वर्णन पढ़कर मन में बड़ा आनंद हुआ।

इस नंदीश्वर द्वीप का कितना महत्त्व है। 'तिलोयपण्णत्ति' में चतुर्णिकाय के देव अलग–अलग फूल, फलों को लेकर नंदीश्वर द्वीप में पूजा करने जाते हैं। बहुत ही सुन्दर वर्णन तीसरे भाग में दिया है। एक बार अवश्यमेव सब भक्त 'तिलोयपण्णत्ति' का स्वाध्याय करें। तीन लोक में कहाँ पर क्या बना है? कितनी संख्या में है, लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई आदि सब कुछ जानने के लिये हमें अवश्य पढ़ना चाहिये।

इस विधान में 52 अर्घ है। 8 पूर्णार्घ है। इसका व्रत वर्ष में तीन बार उत्तम, मध्यम, जघन्य रूप से होता है। व्रत की विधि, व्रत की कथा पढ़कर समझे।

अनंतानंत सिद्ध भगवान को नमोऽस्तु, 24 भगवान को नमोऽस्तु करती हूँ। मेरे दीक्षादाता ग. गणधराचार्य श्री कुंथुसागर जी गुरुदेव को त्रय भक्ति पूर्वक नमोऽस्तु-2... मेरे दीक्षा शिक्षा प्रदाता वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव को त्रय भक्ति पूर्वक कोटि-कोटि नमोऽस्तु-2

इस विधान का संपादन परम पूज्य प्रज्ञायोगी महाकवि दिगम्बर जैनाचार्य कविहृदय श्रावक संस्कार उन्नायक **आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव** ने किया है। गुरुदेव अपना अमूल्य समय निकालकर मेरे हरएक विधान का संपादन करते हैं। कोई भी पुस्तक हो सब में गुरुदेव अपनी लेखनी से उसमें चार चाँद लगा देते हैं। गुरुदेव को हर विषय का बहुत अच्छा ज्ञान है।

वास्तु, ज्योतिष, धार्मिक, सामाजिक, पूजा, विधान, भजन, कविता आदि का जैन धर्म के ग्रंथ और अन्य धर्मों के ग्रंथों का भी विशेष ज्ञान गुरुदेव को है। ऐसे सरल स्वभावी, ज्ञानी, ध्यानी गुरुदेव के गुणों का वर्णन कौन कर सकता है। अर्थात् कोई नहीं। मेरा बड़ा सौभाग्य है जो मुझे ऐसे ज्ञानी गुरु मिले। मैं उनके चरणों में त्रय भक्तिपूर्वक बारम्बार कोटि-कोटि नमोऽस्तु करती हूँ।

यह विधान मैंने तारीख 13-6-2013, वीर निर्वाण संवत् 2540, विक्रम संवत् 2069-70 गुरु पुष्यामृत योग श्रुतपंचमी पर्व पर श्री दिगम्बर जैन मंदिर, प्रीत विहार, दिल्ली में प्रारम्भ किया और रक्षाबंधन के दिन श्री दिगम्बर जैन चंद्रप्रभु जैन मंदिर, राधेपुरी, दिल्ली में पूर्ण हुआ।

इस विधान के प्रकाशक, दानदाता को आशीर्वाद

- आर्यिका आस्थाश्री माताजी

श्री अष्टाह्निका (नन्दीश्वर) व्रत कथा

दोहा- वन्दो पाँचों परमगुरु चौबीसों जिनराज।
अष्टाह्निक व्रत की कहूँ, कथा सबहि सुख काज॥

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र सम्बन्धी आर्यखण्ड में अयोध्या नाम का एक सुन्दर नगर है। वहाँ हरिषेण नाम का चक्रवर्ती राजा अपनी गन्धर्वश्री नाम की पट्टरानी सहित न्यायपूर्वक राज्य करता था। एक दिन बसन्तु ऋतु में राजा नगरजनों तथा अपनी 96000 रानियों सहित वनक्रीड़ा के लिये गया। वहाँ निरापद स्थान में एक स्फटिक शिला पर अत्यन्त क्षीण शरीरी महातपस्वी परम दिगम्बर अरिंजय और अमितंजय नाम के चारण मुनियों को ध्यानारूढ़ देखा। सो राजा भक्तिपूर्वक निजवाहन से उतरकर पट्टरानी आदि समस्त परिजनों सहित श्री मुनियों के निकट बैठ गया और सविनय नमस्कार कर धर्म का स्वरूप सुनने की अभिलाषा प्रगट की। मुनिराज जब ध्यान कर चुके तो धर्मवृद्धि दी और पश्चात् धर्मोपदेश करने लगे हे राजन् !

परम पवित्र अहिंसा (दयामई) धर्म को धारण कर, जो समस्त जीवों को सुखदाई है और निर्ग्रन्थ मुनि (जो संसार के विषय भोगों से विरक्त ज्ञान ध्यान तप में लवलीन हैं, किसी प्रकार का परिग्रह आडम्बर नहीं रखते हैं और सबको हितकारी उपदेश देते हैं।) को गुरु मानकर उनकी सेवा वैयावृत्त कर, जन्म, मरण, रोग, शोक, भय, परिग्रह, क्षुधा, तृषा, उपसर्ग आदि सम्पूर्ण दोषों से रहित वीतराग देव का आराधन कर जीवादि तत्त्वों का यथार्थ श्रद्धान करके निजात्म तत्त्व को पहिचान, यही सम्यग्दर्शन है। ऐसे सम्यग्दर्शन तथा ज्ञानपूर्वक सम्यक्चारित्र को धारण कर, यही मोक्ष (कल्याण) का मार्ग है।

सातों व्यसन का त्याग, अष्ट मूलगुण धारण, पंचाणुव्रत पालन इत्यादि गृहस्थों का चारित्र है और सर्व प्रकार आरम्भ परिग्रह से रहित द्वादश प्रकार का तप करना, पंच महाव्रत, पंच समिति, तीन गुप्ति आदि का धारण करना सो अट्ठाइस मूल गुणों सहित मुनियों का धर्म है (चारित्र है)। इस प्रकार धर्मोपदेश सुनकर राजा ने पूछा- प्रभो ! मैंने कौन सा पुण्य किया है जिससे यह इतनी बड़ी विभूति मुझे प्राप्त हुई है।

तब श्रीगुरु ने कहा, कि इसी अयोध्या नगरी में कुबेरदत्त नाम का वैश्य और उसकी सुन्दरी नाम की पत्नी रहती थी। उसके गर्भ से श्रीवर्मा, जयकीर्ति और जयचन्द ये तीन पुत्र हुए। सो श्रीवर्मा ने एक दिन मुनिराज को वन्दना करके आठ दिन का नन्दीश्वर व्रत किया और उसे बहुत काल तक यथाविधि पालन कर आयु के

अन्त में सन्यास मरण किया जिससे प्रथम स्वर्ग में महर्द्धिक देव हुआ, वहाँ असंख्यात वर्षों तक देवोचित सुख भोगकर आयु पूर्ण करके चया सो इसी अयोध्या नगरी में न्यायी और सत्यप्रिय राजा चक्रबाहू की रानी विमला देवी के गर्भ से तू हरिषेण नाम का पुत्र हुआ है और तेरे नन्दीश्वर व्रत के प्रभाव से वह नव निधि, चौदह रत्न, छ्यानवे हजार रानी आदि चक्रवर्ती की विभूति और यह छः खण्ड का राज्य प्राप्त हुआ है और तेरे दोनों भाई जयकीर्ति और जयचन्द्र भी श्री धर्मगुरु के पास से श्रावक के बारह व्रतों सहित उक्त नन्दीश्वर व्रत पाल कर आयु के अन्त में समाधिमरण करके स्वर्ग में महर्द्धिक देव हुए थे सो वहाँ से चयकर वे हस्तिनापुर में विमल नामा वैश्य की साध्वी सती लक्ष्मीमति के गर्भ से अरिंजय और अमितंजय नाम के दोनों पुत्र हुए सो वे दोनों भाई हम ही हैं। हमको पिताजी ने जैन उपाध्याय के पास चारों अनुयोग आदि सम्पूर्ण शास्त्र पढ़ाये और अध्ययन कर चुकने के अनन्तर कुमार काल बीतने पर हम लोगों के ब्याह की तैयारी करने लगे; परन्तु हम लोगों ने ब्याह को बंधन समझ कर स्वीकार नहीं किया और बाह्याभ्यन्तर परिग्रह को त्याग करके श्रीगुरु के निकट दीक्षा ग्रहण की सो तप के प्रभाव से यह चारण ऋद्धि प्राप्त हुई है। यह सुनकर राजा बोला– हे प्रभु ! मुझे भी कोई व्रत का उपदेश दो, तब श्री गुरु ने कहा कि तुम नन्दीश्वर व्रत पालो और श्री सिद्ध प्रभु की पूजा करो। इस व्रत की विधि इस प्रकार है सुनो :–

इस जम्बूद्वीप के आस–पास लवण समुद्रादि असंख्यात समुद्र और धातकीखंडादि असंख्यात् द्वीप एक दूसरे को चूड़ी के आकार घेरे हुए दूने–दूने विस्तार को लिये हैं। उन सब द्वीपों में जम्बूद्वीप नाभिवत् सबके मध्य है, सो जम्बूद्वीप को आदि लेकर जो धातकीखण्ड, पुष्करवर, वारूणीवर, क्षीरवर, घृतवर, ईक्षुवर और आठवाँ नंदीश्वर द्वीप है। उस नन्दीश्वर द्वीप में प्रत्येक दिशा में एक अंजनगिरि, चार दधिमुख और आठ रतिकर इस प्रकार (13) तेरह पर्वत हैं। चारों दिशाओं के मिलकर सब 52 पर्वत हुए। प्रत्येक पर्वतों पर अनादि निधन (शाश्वत) अकृत्रिम जिन भवन हैं और प्रत्येक मन्दिर में 108–108 जिनबिम्ब अतिशययुक्त विराजमान हैं, ये जिनबिम्ब 500 धनुष ऊँचे हैं। वहाँ इन्द्रादि देव जाकर नित्यप्रति भक्तिपूर्वक पूजा करते हैं परन्तु मनुष्य का गमन नहीं होता, इसलिये मनुष्य उन चैत्यालयों की भावना अपने–अपने स्थानीय चैत्यालयों में ही भाते हैं और नन्दीश्वर द्वीप का मण्डल मांडकर वर्ष में तीन बार (कार्तिक, फाल्गुन और आषाढ़ मास के शुक्ल पक्षों में अष्टमी से पूनम तक) आठ–आठ दिन पूजनाभिषेक करते हैं। और आठ दिन व्रत भी करते हैं। अर्थात् सुदी सातम से धारणा करने के लिये नहाकर

प्रथम जिनेन्द्रदेव को अभिषेक पूजा करे, फिर गुरु के पास अथवा गुरु न मिलें तो जिनबिम्ब के सम्मुख खड़े होकर व्रत का नियम करे।

सातम से पड़वा तक ब्रह्मचर्य रखे, सातम को एकासन करे, भूमि पर शयन करे। आठम के उपवास करे, रात्रि जागरण करे, दिन में मण्डल मांडकर अष्ट द्रव्यों से पूजा और पंचामृत अभिषेक करें, पंचमेरु की स्थापना कर पूजा करें, चौबीस तीर्थंकरों की पूजा, जयमाला पढ़ें, नन्दीश्वर व्रत की कथा सुने और **''ॐ ह्रीं नन्दीश्वर संज्ञाय नमः''** इस मंत्र की 108 जाप करें।

आठम के उपवास से दस लाख उपवासों का फल मिलता है। नवमी को सब क्रिया आठम के समान ही करना, केवल **ॐ ह्रीं अष्टमहाविभूतिसंज्ञाय नमः** इस मंत्र की 108 जाप करें और दोपहर पश्चात् पारणा करें। इस दिन दिन दस हजार उपवासों का फल होता है। दशमी के दिन भी सब क्रिया आठम के समान ही करें, केवल **ॐ ह्रीं त्रिलोकसारसंज्ञाय नमः** इस मन्त्र का 108 जाप करें और केवल पानी और भात खावे। इस दिन व्रत का फल साठ लाख उपवास के समान होता है। ग्यारस के दिन भी सब क्रिया आठम के समान करें, सिद्धचक्र की त्रिकाल पूजा करें और **'ॐ ह्रीं चतुर्मुखसंज्ञाय नमः'** इस मंत्र का 108 जाप करें और ऊनोदर (अल्प भोजन) करें।

इस दिन के व्रत से 50 लाख उपवास का फल होता है। बारस को भी सब क्रिया ग्यारस के ही समान करें और **'ॐ ह्रीं पंचमहालक्षणसंज्ञाय नमः'** इस मंत्र का 108 जाप करे तथा एकासन करें। इस दिन के व्रत से 54 लाख उपवासों का फल होता है। तेरस के दिन भी सर्व क्रिया बारस के ही समान करें। केवल **'ॐ ह्रीं स्वर्गसोपान संज्ञाय नमः'** इस मंत्र का 108 जाप करे और इमली और भात का भोजन करे। इस दिन के व्रत से 40 लाख उपवास का फल मिलता है।

चौदस के दिन सब क्रिया ऊपर के समान ही करें और **'ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राय नमः'** इस मंत्र का 108 जाप करे तथा ऋण (सूखा) साग यदि शुद्ध हो तो उसके साथ अथवा पानी के साथ भात खावे। इस दिन व्रत का फल 1 करोड़ उपवास का होता है। पूनम के दिन सब क्रिया ऊपर के ही समान करे, केवल **'ॐ ह्रीं इन्द्रध्वजसंज्ञाय नमः'** इस मंत्र का 108 जाप करे तथा चार प्रकार के आहार का त्याग करें, अनशन व्रत करे। इस दिन के व्रत का तीन करोड़ पांच लाख उपवास फल होता है। पश्चात् पड़वा के दिन पूजनादि क्रिया के अनन्तर घर आकर चार प्रकार के संघ को चार प्रकार का दान करके पीछे आप पारणा करे।

जो कोई इस व्रत को तीन वर्ष तक करता है उसे स्वर्ग सुख मिलता है। पीछे कितनेक भव में नियम से मोक्ष पद पाता है और जो पाँच वर्ष तक करता है वह उत्तमोत्तम सुख भोगकर सातवें भव मोक्ष जाता है तथा जो सात वर्ष एवं आठ वर्ष तक व्रत करता है वह द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की योग्यतापूर्वक उसी भव से भी मोक्ष जाता है। इस व्रत को अनन्तवीर्य और अपराजित ने किया, सो वे दोनों चक्रवर्ती हुए और जयकुमार इस व्रत के प्रभाव से चक्रवर्ती का सेनापति हुआ। जयकुमार-सुलोचना ने यह व्रत किया जिससे वे अवधिज्ञानी होकर ऋषभनाथ भगवान के 72वें गणधर हुए और उसी भव में मोक्ष गये। सुलोचना भी आर्यिका के व्रत धरकर स्त्रीलिंग छेद स्वर्ग में महर्द्धिक देव हुई। श्रीपाल का भी इससे कोढ़ गया और उसी भव से मोक्ष भी हुआ। अधिक कहाँ तक कहा जाय। इस व्रत की महिमा कोटि जीभ से भी नहीं कही जा सकती है।

इस प्रकार तीन, पाँच या सात (आठ) वर्ष इस व्रत को करके उद्यापन करें, आवश्यकता हो तो नवीन जिनालय बनावे, सब संघ को तथा विद्यार्थीजनों को मिष्ठान भोजन करावे, चौबीस तीर्थंकरों की प्रतिमा बनावे। शांति हवन आदि शुभ कार्य करे, प्रतिष्ठा करावे, पाठशाला बनावे, ग्रन्थों का जीर्णोद्धार करे और प्रत्येक प्रकार के उपकरण आठ मंदिरजी में भेंट करे, इस प्रकार उत्साह से उद्यापन करे। यदि उद्यापन की शक्ति न हो तो दूना व्रत करे इत्यादि। इस प्रकार राजा हरिषेण ने व्रत की विधि और फल सुनकर मुनिराज को नमस्कार किया और घर आकर कितने वर्षों तक यथाविधि व्रत पालन करके पश्चात् संसार भोगों से विरक्त होकर जिनदीक्षा ले ली, सो तप के प्रभाव व शुक्लध्यान के बल से चार घातिया कर्मों का नाश करके केवलज्ञान प्राप्त किया और अनेक देशों में विहार कर भव्य जीवों को संसार से पार होने वाले सच्चे जिनमार्ग पर लगाया। पश्चात् आयु के अंत में शेष कर्मों को नाशकर सिद्ध पद पाया।

इस प्रकार यदि अन्य भव्य जीव भी इस व्रत का पालन करेंगे तो वे उत्तमोत्तम सुखों को अपने-अपने भावों के अनुसार उत्तम गतियों को प्राप्त होवेंगे। तात्पर्य- व्रत का फल तब ही होता है, जबकि मिथ्यात्व तथा क्रोध, मान, माया और लोभ आदि कषाय तथा मोह को मन्द किया जाय। इसलिये इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

दोहा- नन्दीश्वर व्रत फल लियो, श्री हरिसेन नरेश।
कर्मनाश शिवपुर गयो, वन्दूं चरण हमेश।।

पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–

श्लोक– **रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।**
पञ्च गुरुणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे॥

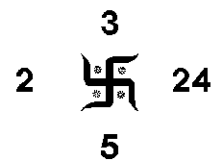

विनय पाठ

(दोहा)

प्रथम जिनेश्वर देव हो, वीतराग सर्वज्ञ।
हित उपदेशी नाथ तुम, ज्ञानरवि मर्मज्ञ॥1॥

केवलज्ञानी बन प्रभो, हरा जगत अंधियार।
तीन लोक के बंधु बन, किया जगत उपकार॥2॥

धर्म देशना से मिला, जग को दिव्य प्रकाश।
तव चरणों में नित रहे, यही करें अरदास॥3॥

कर्म बेड़ियाँ तोड़ने, भक्ति करें त्रयकाल।
तीन योग से हे प्रभो !, चरणों में नत भाल॥4॥

चतुर्गति भव भ्रमण से, तारों हमें जिनेश।
दयानिधि जिन ! कर दया, हरलो पाप विशेष॥5॥

प्रभुवर पूजा आपकी, सर्व रोग विनशाय।
विष भी अमृत हो प्रभो !, शत्रु मित्र बन जाय॥6॥

हलधर बलधर चक्रधर, अर्चा के उपहार।
परम्परा जिनभक्ति से, दे प्रभु पद उपहार॥7॥

बड़े पुण्य से जिन मिले, मिला प्रभु का द्वार।
मुक्त करो त्रय रोग से, विनती बारम्बार॥8॥

हम सेवक प्रभु आपके, हे अबोध ! अनजान।
राग-द्वेष अज्ञान हर, दे दो सच्चा ज्ञान॥9॥

मंगल उत्तम शरण है, मंगलमय जिनधर्म।
मंगलकारी सब गुरु, हरो हमारे कर्म॥10॥

चौबीसों जिनवर नमूँ, नमन पंच परमेश।
जिनवाणी गणधर गुरु, 'आस्था' नमें हमेश॥11॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पूजा आरंभ (हिन्दी)

ॐ जय-जय-जय - नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

(ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

णमोकार मंत्र महिमा

(चौपाई)

अपवित्र या जन पवित्र हो, सुस्थित हो या दुस्थित भी हो।
नमस्कार मंत्रों को ध्यायें, पापों से छुटकारा पायें॥1॥

सर्व अवस्था में भी ध्यायें, पापी भी पावन बन जाये।
जो सुमिरे नित परमातम को, अन्दर बाहर शुचि बने वो॥2॥

अपराजित ये मंत्र कहाता, सब विघ्नों को दूर भगाता।
सब मंगल में मंगलकारी, प्रथम सुमंगल जग उपकारी॥3॥

महामंत्र णवकार हमारा, सब पापों से दे छुटकारा।
सब मंगल में प्रथम कहाता, महामंत्र मंगल कहलाता॥4॥

परम ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, सिद्धचक्र सुन्दर बीजाक्षर।
मैं मन-वच-काया से नमता, नमस्कार मंत्रों को करता॥5॥

अष्टकर्म से मुक्त जिनेश्वर, श्रीपति जिन मंदिर परमेश्वर।
सम्यक्त्वादि गुणों के स्वामी, नमस्कार मैं करता स्वामी॥6॥

जिनवर की संस्तुति करने से, मुक्ति मिले सारे विघ्नों से।
भूतादि का भय मिट जाता, विष निर्विष निश्चित हो जाता॥7॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे॥1॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे॥3॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शंभु छंद)

श्री मज्जिनेन्द्र हो विश्ववंद्य, तुम तीन जगत के ईश्वर हो।
तुम चऊ अनंत गुण के धारी, स्याद्वाद धर्म परमेश्वर हो॥
श्री मूल संघ की विधि से मैं, अपना बहु पुण्य बढ़ाने को।
मैं मंगल पुष्प चढ़ाता हूँ, जिन पूजा यज्ञ रचाने को॥1॥

त्रैलोक्य गुरु हे जिनपुंगव !, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
अपने स्वभाव में सुस्थित जिन, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥
सम्पूर्ण रत्नत्रय के धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
हे समवशरण वैभव धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥2॥

अविराम प्रवाहित ज्ञानामृत, सागर को पुष्प समर्पित है।
निज परभावों के भेद विज्ञ, जिनवर को पुष्प समर्पित है॥
त्रिभुवन को सारे द्रव्यों के, नायक को पुष्प समर्पित है।
त्रैकालिक सर्व पदार्थों के, ज्ञायक को पुष्प समर्पित है॥3॥

पूजा के सारे द्रव्यों को, श्रुत सम्मत शुद्ध बनाया है।
यह भाव शुद्धि के अवलम्बन, द्रव्यों को शुद्ध सजाया है॥
शुचि परमातम का अवलम्बन, आतम को शुद्ध बनाता है।
उसको पाने हे जिन ! तेरी, यह पूजा भव्य रचाता है॥4॥

अर्हत् पुराण पुरुषोत्तम जिन, उनमें न सचमुच गुरुता है।
मैं भी स्वभाव से उन सम हूँ, मुझमें न निश्चय लघुता है॥

प्रभु से हो एकाकार मेरा, मैं ऐसी भक्ति रचाता हूँ।
केवल ज्ञानाग्नि में अपना, मैं पुण्य समग्र चढ़ाता हूँ॥5॥

ॐ ह्रीं जिनप्रतिमोऽपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल पाठ

(चौपाई)

वृषभ सुमंगल करे हमारा, अजित सुमंगल करे हमारा।
संभव स्वामी मंगलकारी, अभिनंदन हैं मंगलकारी॥1॥

सुमतिनाथ हैं मंगलकारी, पद्मप्रभु हैं मंगलकारी।
श्री सुपार्श्व जिन मंगलकारी, चंद्रप्रभु हैं मंगलकारी॥2॥

पुष्पदंत हैं मंगलकारी, शीतल स्वामी मंगलकारी।
श्री श्रेयांस जिन मंगलकारी, वासुपूज्य हैं मंगलकारी॥3॥

विमलनाथ हैं मंगलकारी, श्री अनंत जिन मंगलकारी।
धर्मनाथ हैं मंगलकारी, शांतिनाथ हैं मंगलकारी॥4॥

कुंथुनाथ हैं मंगलकारी, अरहनाथ हैं मंगलकारी।
मल्लिनाथ हैं मंगलकारी, मुनिसुव्रत हैं मंगलकारी॥5॥

नमि जिनवर हैं मंगलकारी, नेमीनाथ हैं मंगलकारी।
पार्श्वनाथ हैं मंगलकारी, वीर जिनेश्वर मंगलकारी॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्य अचल क्षायिक ज्ञानधारी, विशुद्ध मनःपर्यय ज्ञानधारी।
देशावधि आदि युत ऋषि मुनिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥1॥

महाकोष्ठ बीजबुद्धि पदानुसारि, संभिन्न संश्रोतृ स्वयं बुद्धिधारी।
प्रत्येकबुद्ध-बोधिबुद्ध ऋषिवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥2॥

अभिन्नदशपूर्व-चतुर्दश पूर्वी, दिव्य मतिज्ञान महाबलधारी।
अष्टांगनिमित्त ज्ञाता ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥3॥

स्पर्श-चक्षु-कर्ण-घ्राण-रसना, आदि प्रबल इन्द्रिय के धारी।
महाशक्तिवन्त जिनमुनि-यति-ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥4॥

फल-तन्तु-नीर-जंघा-श्रेणी, पुष्प-बीज-अंकुर-रवि-अग्नि-गामी।
नभ-जल-वायुचारण ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥5॥

अणु-महालघु-गुरुऋद्धिधारी, सकामरूपित्व-वशित्वधारी।
वर्द्धमान बल के धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥6॥

मन औ वचनबल-कायबल ऋद्धि, प्राकाम्य-अप्रतिघात गुणधारी।
विक्रिया-क्रियाऋद्धि धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥7॥

उग्रोग्रतप-दीप्त-तप-तप्ततपसी, अवस्थित-उग्रतप-महातपऋद्धि।
तपो-लब्धि आदि से युक्त ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥8॥

आमर्ष-सर्वौषध ऋद्धिधारी, आषीर्विष-दृष्टिविष बल धारी।
सखिल्ल-विडजल्ल-मल्लौषधियुक्त, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥9॥

क्षीरास्रवी-घृतस्रावी मुनीश्वर, अमृत-मधु-महारस के धारी।
अक्षीणआलय-महानस आदि, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥10॥

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं

(9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

विधान का माण्डला

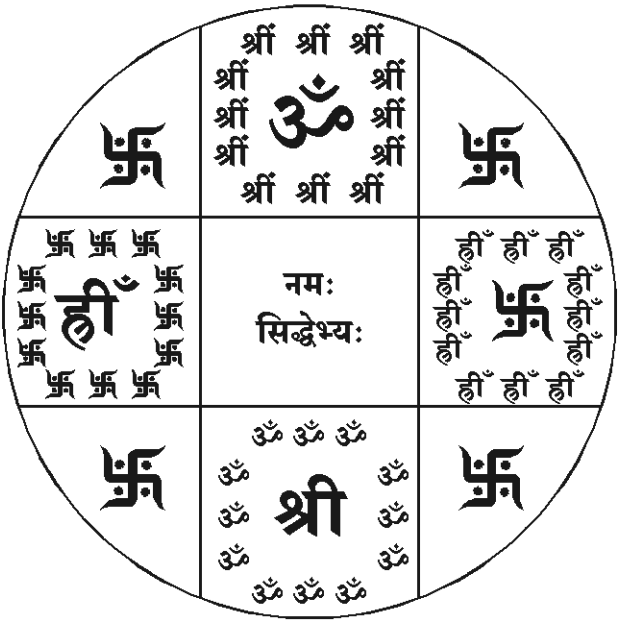
श्रीं श्रीं श्रीं
श्रीं श्रीं
श्रीं श्रीं
श्रीं श्रीं
श्रीं श्रीं श्रीं
ॐ
ह्रीं ह्रीं ह्रीं
ह्रीं ह्रीं
ह्रीं ह्रीं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं
ह्रीं
नमः
सिद्धेभ्यः
ॐ ॐ ॐ
ॐ ॐ
ॐ ॐ
ॐ ॐ ॐ
श्री

ऋद्धि मंत्र

स्वाहा बोलते हुये प्रत्येक मंत्र में यहाँ पुष्प चढ़ायें या धूप चढ़ायें। विधान करने से पूर्व ऋद्धि मंत्र अवश्य पढ़े।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ।।1 ।।

1. णमो जिणाणं
2. णमो ओहि-जिणाणं
3. णमो परमोहि-जिणाणं
4. णमो सव्वोहि-जिणाणं
5. णमो अणंतोहि-जिणाणं
6. णमो कोट्ठ-बुद्धीणं
7. णमो बीज-बुद्धीणं
8. णमो पादाणु-सारीणं
9. णमो संभिण्ण-सोदारणं
10. णमो सयं-बुद्धाणं
11. णमो पत्तेय-बुद्धाणं
12. णमो बोहिय-बुद्धाणं
13. णमो उजु-मदीणं
14. णमो विउल-मदीणं
15. णमो दस पुव्वीणं
16. णमो चउदस-पुव्वीणं
17. णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं
18. णमो विउव्वइड्ढि-पत्ताणं
19. णमो विज्जाहराणं
20. णमो चारणाणं
21. णमो पण्ण-समणाणं
22. णमो आगासगामीणं
23. णमो आसी-विसाणं
24. णमो दिट्ठिविसाणं
25. णमो उग्ग-तवाणं
26. णमो दित्त-तवाणं
27. णमो तत्त-तवाणं
28. णमो महा-तवाणं
29. णमो घोर-तवाणं
30. णमो घोर-गुणाणं
31. णमो घोर-परक्कमाणं
32. णमो घोर-गुण-बंभयारीणं
33. णमो आमोसहि-पत्ताणं
34. णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं
35. णमो जल्लोसहि-पत्ताणं
36. णमो विप्पोसहि-पत्ताणं
37. णमो सव्वोसहि-पत्ताणं
38. णमो मण-बलीणं
39. णमो वचि-बलीणं
40. णमो काय-बलीणं
41. णमो खीर-सवीणं
42. णमो सप्पि-सवीणं
43. णमो महुर सवीणं
44. णमो अमिय-सवीणं
45. णमो अक्खीण महाणसाणं
46. णमो वड्ढमाणाणं
47. णमो सिद्धायदणाणं
48. णमो भयवदो-महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री नन्दीश्वर पूजन विधान

अथ स्थापना (शंभु छंद)

ये द्वीप आठवाँ नन्दीश्वर, शाश्वत अतिशय सुखकारी है।
इनके बावन चैत्यालय की, प्रतिमायें सब मनहारी हैं॥
कर युग में सुन्दर सुमन लिये, हम अभिनंदन करने आये।
शत इन्द्रों से पूजित प्रभु की, पूजा कर हम शिवसुख पायें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमा-समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शेर छंद)

कलशों में नीर लेके भक्त ईश को ध्यायें।
त्रय रोग नशाने प्रभु को नीर चढ़ायें॥
बावन जिनालयों के चैत्य की महार्चना।
हम श्री जिनार्चना से नशें कर्म वंचना॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व-पश्चिमोत्तर-दक्षिण दिक्षु द्वि-पंचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक जिनालय में बिम्ब इक सौ आठ हैं।
उनको चढ़ाये गंध आज ठाठ-बाट से॥ बावन... ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व-पश्चिमोत्तर-दक्षिण दिक्षु द्वि-पंचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

वो मूर्तियाँ अनादि निधन रत्न से बनीं।
मोती व तन्दुलों से उनको पूजते गुणी॥ बावन... ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व-पश्चिमोत्तर-दक्षिण दिक्षु द्वि-पंचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय से युक्त नाथ को हम पुष्प चढ़ायें।
निज कामबाण नाश हेत पूजने आये ।।
बावन जिनालयों के चैत्य की महार्चना।
हम श्री जिनार्चना से नशें कर्म वंचना ।।4 ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व-पश्चिमोत्तर-दक्षिण दिक्षु द्वि-पंचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर जलेबी मालपुआ रबड़ी कचौड़ी।
हम नाथ को चढ़ायें आज शुद्ध पकौड़ी।। बावन... ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व-पश्चिमोत्तर-दक्षिण दिक्षु द्वि-पंचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये द्वीप रत्न दीप से सदा ही जगमगे।
करके प्रभु की आरती मोहान्धतम भगे।। बावन... ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व-पश्चिमोत्तर-दक्षिण दिक्षु द्वि-पंचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

उन मन्दिरों में महक उठे धूप गंध की।
हम धूप चढ़ाके नशायें कर्म बंदगी[1]।। बावन... ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व-पश्चिमोत्तर-दक्षिण दिक्षु द्वि-पंचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हर एक ऋतु के फलों की थाल सजायें।
पाने सुमोक्ष हम प्रभु के चर्ण चढ़ायें।। बावन... ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व-पश्चिमोत्तर-दक्षिण दिक्षु द्वि-पंचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! अष्ट द्रव्य को स्वीकार कीजिये।
संसार के दुःखों से हमें तार दीजिये।। बावन... ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप संबंधी पूर्व-पश्चिमोत्तर-दक्षिण दिक्षु द्वि-पंचाशज्जिनालयस्थ-जिनप्रतिमाभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. दासता।

आठ पूजाओं के पूर्णार्घ

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

अंजनगिरि दधिमुख रतिकर पे, तेरह मंदिर न्यारे।
पुरब दिश के इन जिनगृह में, सिद्ध प्रभु मनहारे॥
शाश्वत अकृत्रिम चैत्यों को, हम सब अर्घ चढ़ायें।
नंदीश्वर के बावन प्रभु को, हम सब शीश नवायें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (गीता छंद)

ये आठवाँ इक द्वीप है, शुभ नाम नंदीश्वर कहा।
बावन जिनालय बिम्ब को, सुर पूजते जाकर वहाँ॥
हम भी यहाँ अर्चा करें, भक्ति से शिवसुख प्राप्त हो।
श्रद्धा उसी जिनदेव पे, जो वीतरागी आप्त हो॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे आग्नेय दिशा संबंधी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)

नंदीश्वर दक्षिण अंजन गिरि, उस गिरि पे दधिमुख चार कहे।
रतिकर पर्वत विदिशाओं में, कुल पर्वत प्रभु ने आठ कहे॥
तेरह जिनमंदिर वहाँ कहे, उत्तम शिखरों पे ध्वज फहरे।
हम भी उनको निशदिन पूजें, वो भव्य जनों का चित्त हरे॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (गीता छंद)

ये आठवाँ इक द्वीप है, शुभ नाम नंदीश्वर कहा।
बावन जिनालय बिम्ब को, सुर पूजते जाकर वहाँ॥

हम भी यहाँ अर्चा करें, भक्ति से शिवसुख प्राप्त हो।
श्रद्धा उसी जिनदेव पे, जो वीतरागी आप्त हो।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे नैऋत्यदिशि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

नंदीश्वर के पश्चिम दिश में, उन्नत गिरी अंजन हैं।
वहाँ प्रतिष्ठित प्रतिमाओं का, शत्-शत् अभिवंदन हैं।।
दधिमुख पर्वत की विदिशा में, रतिकर आठ कहे हैं।
तेरह चैत्यालय को हम सब, निशदिन पूज रहे हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (गीता छंद)

ये आठवाँ इक द्वीप है, शुभ नाम नंदीश्वर कहा।
बावन जिनालय बिम्ब को, सुर पूजते जाकर वहाँ।।
हम भी यहाँ अर्चा करें, भक्ति से शिवसुख प्राप्त हो।
श्रद्धा उसी जिनदेव पे, जो वीतरागी आप्त हो।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे वायव्य दिशी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

द्वीप आठवाँ नंदीश्वर ये, उत्तर दिश सुखकारी।
रतिकर दधिमुख अंजनगिरि के, मन्दिर मंगलकारी।।
तेरह जिन चैत्यालय को हम, अर्घ पवित्र चढ़ायें।
उनके शाश्वत जिनबिम्बों को, हम सब शीश झुकायें।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (गीता छंद)

ये आठवाँ इक द्वीप है, शुभ नाम नंदीश्वर कहा।
बावन जिनालय बिम्ब को, सुर पूजते जाकर वहाँ॥
हम भी यहाँ अर्चा करें, भक्ति से शिवसुख प्राप्त हो।
श्रद्धा उसी जिनदेव पे, जो वीतरागी आप्त हो॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे ईशानदिशी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतिधारा हम करें, जिन पद नीर चढ़ाय।
नन्दीश्वर के सब प्रभो, समता शांति दिलाय॥

शांतये शांतिधारा।

दोहा- वकुल मालती मोगरा, नील कमल कचनार।
अभिनन्दन प्रभु आपका, भव्य करें मनहार॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- नन्दीश्वर शुभ द्वीप की, गायें हम जयमाल।
पुष्पों की माला चढ़ा, पायें जिनगुण माल॥

(नरेन्द्र छंद)

नमस्कार है जिन प्रतिमा को, नमस्कार नंदीश्वर को।
नमस्कार बावन चैत्यों को, नमस्कार हो जिनवर को॥
नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, जग में मंगलकारी है।
सर्व सुरासुर से पूजित जिन, रत्नमयी मनहारी हैं॥1॥
पर्व अठाई एक वर्ष में, तीन बार नित आता है।
कार्तिक फागुन षाढ मास में, पर्व मनाया जाता है॥

नन्दीश्वर में जाकर सुरगण, पूजा-पाठ रचाते हैं।
आठ दिवस तक वे सब मिलकर, उत्सव वहाँ मनाते हैं॥2॥

द्वीप आठवें नंदीश्वर में, मनुज नहीं जा पाते हैं।
हम परोक्ष में जिनमंदिर में, पूजा कर सुख पाते हैं॥
बावन हैं इसमें चैत्यालय, रत्नमयी सब प्रतिमायें।
सब मन्दिर में अष्टोत्तर शत, राजे श्री जिन प्रतिमायें॥3॥

दधिमुख रतिकर अंजनगिरी के, बावन जिन चैत्यालय हैं।
ऊँचे-ऊँचे मन्दिर सारे, भव्यों को सौख्यालय हैं॥
प्रतिमा हमसे भले दूर हो, फिर भी फल वो देती है।
उनकी पूजा हर पूजक के, दुःख संकट हर लेती है॥4॥

अष्टाह्निक में आठ दिवस तक, भव्य विधान रचाते हैं।
रत्नचूर्ण का रंग बिरंगा, मण्डल भव्य बनाते हैं॥
श्रीफलादि में ध्वजा लगाकर, प्रभु को अर्घ चढ़ाते हैं।
प्रभु पूजा के फल से क्रमशः, मोक्षपुरी को पाते हैं॥5॥

बेला तेला या एकाशन, अनशन जो जन करते हैं।
अष्ट करम से मुक्ति पाकर, अष्टम् भू वो वरते हैं॥
चारण ऋद्धिधारी मुनिगण, प्रभु का ध्यान लगाते हैं।
'आस्था' रख त्रय गुप्ति धर के, मोक्ष सम्पदा पाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे द्वि-पंचाशज्जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, मध्यलोक में आये।
पर्व अठाई में हम इसकी, पूजा नित्य रचायें॥
जिनवर की गुण निधियाँ पाने, 'आस्था' उर प्रगटायें।
तीन गुप्तिधर संयम पालें, सर्व सुखों को पायें॥

॥ इत्याशीर्वादः॥

नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिश जिनालय पूजा

अथ स्थापना (शंभु छंद)

नन्दीश्वर के पूरब दिश में, तेरह चैत्यालय श्रुत गाये।
अतिशय युत ये जिनगृह सुन्दर, हम भक्तों के मन बस जायें॥
उनका प्रत्यक्ष महा अर्चन, श्रद्धा से सुरगण करते हैं।
हम भी परोक्ष आह्वान करें, सब चैत्यालय को भजते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभु छंद)

गंगा नदि का शुचि नीर लिये, श्री जिनवर का प्रक्षाल करें।
जिन प्रतिमा की सम्यक् अर्चा, मम जन्म जरादिक रोग हरे॥
नंदीश्वर के पूरब दिश में, शाश्वत तेरह चैत्यालय हैं।
हम उनकी भक्ति विधान रचा, जायेंगे मोक्ष सुखालय में॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गोशीर्ष तगर चन्दन घिस हम, जिनवर को आज चढ़ाते हैं।
प्रभु की पावन पग रज ले हम, श्रद्धा से शीश लगाते हैं॥ नंदीश्वर..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उन चैत्यालय की प्रतिमायें, सब रत्नमयी सुन्दर प्यारी।
रत्नों के अक्षत पुंज-चढ़ा, हम भक्ति करें अतिशयकारी॥ नंदीश्वर..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जो स्वयं पुष्प की माल बना, प्रभुवर को अर्पण करते हैं।
वो मालामाल बनें जग में, सुख वैभव शांति वरते हैं।।
नंदीश्वर के पूरब दिश में, शाश्वत तेरह चैत्यालय हैं।
हम उनकी भक्ति विधान रचा, जायेंगे मोक्ष सुखालय में।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

छप्पन प्रकार के व्यंजन से, बावन चैत्यालय को पूजें।
यह क्षुधारोग नश जाये प्रभु, इस कारण हम निशदिन पूजें।। नंदीश्वर..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों प्रकार के देव सभी, दिन-रात नाथ को भजते हैं।
हम भी दीपक लेकर पूजें, मिथ्यात्व मोह को तजते हैं।। नंदीश्वर..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पावक में धूप चढ़ाने से, मंदिर सुरभित हो जाता है।
जिन अर्चा में जब भाव लगे, जीवन सुरभित हो जाता है।। नंदीश्वर..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आमादि चढ़ा कीर्त्तन करते, वाद्यों की मंगल ध्वनि बजे।
श्रीफल कदली व गन्ने से, जिनवर के मंडप पूर्ण सजें।। नंदीश्वर..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर में सुर ताल विशेष मिला, सुर देव-देवियाँ नृत्य करें।
वसुविध द्रव्यों की थाल चढ़ा, हम भी जिनवर की भक्ति करें।। नंदीश्वर..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व दिशागत चैत्यालय के अर्घ

दोहा- पूर्व दिशा के नाथ को, पूजूँ मन वच काय।
तेरह जिनगृह चैत्य को, पुष्पाञ्जलि चढ़ाय।।

इति श्री नन्दीश्वर द्वीपे पूर्वदिक् स्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(अडिल्ल छंद)

नन्दीश्वर की पूर्व दिशा में आइये।
अंजनगिरि के चैत्यालय को ध्याइये।।
सिद्ध जिनालय इस पर्वत की शान हैं।
इस पर्वत पे शोभे श्री भगवान हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी अंजनगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि की चउ दिश जग में वंद्य हैं।
चार सरोवर कुमुद कमल से रम्य है।।
पूरब नंदा वापी दधिमुख शैल है।
प्रभु को पूजें छूटे कर्मन् जैल से।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदावापिका मध्य स्थित दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दधिमुख दही सम श्वेत वर्ण का जानिये।
'नन्दवती' वापी दक्षिण में मानिये।।
चारों दिश में वृक्ष आदि फूलें फलें।
हम भी प्रभु को पूजें और फूलें फलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदवती वापिका मध्य स्थित दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश की वापी है 'नन्दोत्तरा'।
एक लाख योजन शाश्वत विस्तृत अहा।।

दधिमुख नग पे जिन चैत्यालय एक हैं।
अर्घ चढ़ा हम चरणों में सिर टेकते॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदोत्तरावापिका मध्य स्थित दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दस हजार योजन दधिमुख पर्वत कहा।
उत्तर दिश 'नंदीघोषा' वापी जहाँ॥
रत्नमयी जिनबिम्ब यहाँ हैं स्वर्ण के।
अर्घ सजा लाये हम नाना वर्ण के॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदिघोषा वापिका मध्य स्थित दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदा द्रह ईशान कोण रतिकर वहाँ।
उसके ऊपर रत्नों का मंदिर अहा॥
रतिकर पर्वत स्वर्ण वर्ण का जानिये।
प्रभु पूजा से सुख मिलता यह मानिये॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदावापी ईशानकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नंदा' द्रह आग्नेय दिशा में ध्याइये।
त्रिभुवन पति की पूजा से सुख पाइये॥
रतिकर पर्वत इक हजार योजन महा।
वहाँ विराजे प्रभु को हम पूजें यहाँ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशी नंदावापी आग्नेयकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

अंजनगिरि दधिमुख रतिकर पे, तेरह मंदिर न्यारे।
पुरब दिश के इन जिनगृह में, सिद्ध प्रभु मनहारे॥

शाश्वत अकृत्रिम चैत्यों को, हम सब अर्घ चढ़ायें।
नंदीश्वर के बावन प्रभु को, हम सब शीश नवायें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

यह द्वीप शाश्वत आठवाँ, इसकी करें हम वन्दना।
भव-भव दुःखों का नाश हो, इस हेतु करते अर्चना॥
जिनवर गुणों की प्राप्ति हित, हम शांतिधारा कर रहे।
'आस्था' करें गुप्ति धरें, पुष्पाञ्जलि हम कर रहे॥

शांतये शांतिधारा॥ दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- दर्शन हमको दीजिए, नंदीश्वर के नाथ।
हमें शरण में लीजिए, तुम्हें नमावें माथ॥

(शंभु छंद)

जय नंदीश्वर जय नंदीश्वर, इसकी जयमाला हम गायें।
यह द्वीप आठवाँ नंदीश्वर, यह मध्यलोक में ही आयें॥
यह वसुधा कितनी पावन है, जिस भू पे इतने चैत्य बनें।
शाश्वत अकृत्रिम रत्नमयी, बावन जिनगृह अभिराम बनें॥1॥

नंदीश्वर के चारों दिश में, तेरह-तेरह चैत्यालय हैं।
अंजनगिरि दधिमुख रतिकर पे, शुभ रत्नमयी देवालय हैं॥
यह इन्द्रनील मणियों वाले,चौरासी सहस ऊँचाई है।
सब तरफ गोल हैं इक समान, चूड़ी जैसी गोलाई है॥2॥

इस गिरि पे चार वापियाँ हैं, योजन इक लाख कहीं सारी।
जलपूर्ण वापियों के अंदर, कमलादि खिले हैं मनहारी॥
चारों द्रह की चारों दिश में, उद्यान बने सुन्दर-सुन्दर।
अशोक आम और सप्त छंद, चंपादि लगे सबको सुन्दर॥3॥

वापी के मध्य भाग में ही, पर्वत दधिमुख दधि सम सोहे।
योजन हजार दस ऊँचा ये, सुर ललनाओं का मन मोहे॥
वापी के दोनों कोने में, रतिकर पर्वत ये आठ कहे।
जो इनकी पूजा-पाठ करे, उनके घर में नित ठाठ रहे॥4॥

योजन हजार चौड़े ऊँचे, रतिकर पर्वत हैं स्वर्णमयी।
सब शैल स्वर्ण के बने हुये, इनमें प्रतिमायें रत्नमयी॥
वैभव युत ये तेरह मंदिर, ये निलय शिखर युत बतलाये।
उन पर हैं स्वर्ण कलश सुन्दर, ध्वज उनकी कीर्ति फैलाये॥5॥

इस नंदीश्वर के दर्शन को, केवल सुरगण ही जा सकते।
साक्षात् प्रभु के दर्शन से, सम्यक्त्व निधि वो पा सकते॥
हम भी परोक्ष में पूजा कर, पूजा का उत्तम फल पायें।
'आस्था' से नमन करें प्रभु को, भवसागर से हम तिर जायें॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पूर्वदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, मध्यलोक में आये।
पर्व अठाई में हम इसकी, पूजा नित्य रचायें॥
जिनवर की गुण निधियाँ पाने, 'आस्था' उर प्रगटायें।
तीन गुप्तिधर संयम पालें, सर्व सुखों को पायें॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

नन्दीश्वर द्वीप आग्नेय दिश जिनालय पूजा

अथ स्थापना (शंभु छंद)

नंदीश्वर की आग्नेय दिशी, दधिमुख दही सम नित चमक रहा।
श्री शैल रतिकर वापिका, उसमें जिन मंदिर दमक रहा॥
ये ढ़ोल समान गोल ऊँचा, इसमें ऊँची जिन प्रतिमायें।
आह्वान करें हम पुष्प लिये, वे नाथ हृदय में बस जाये॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे आग्नेयदिशि जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शंभु छंद)

स्वर्णिम सिंहासन स्वर्ण कलश, हे स्वर्ण रत्न की पाण्डु शिला।
उस पर प्रभु का हम कलश करें , ये अवसर हमको आज मिला॥
वे रत्नमयी जिन प्रतिमायें, शाश्वत हैं नाना रत्नों की।
हम उन्हें यही से पूज रहे, वे अरज सुनें हर भक्तों की॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे आग्नेयदिशि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन कपूर का प्रभुवर पर, हम पूर्ण विलेपन करते हैं।
ये अर्चा भव संताप हरे, ऐसी श्रद्धा हम करते हैं॥ वे रत्नमयी..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे आग्नेयदिशि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पदवी धारी भगवन्, हम अक्षत धोकर के लाये।
अक्षत से पूजा करते हैं, हम निश्चय अक्षय पद पायें॥ वे रत्नमयी..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे आग्नेयदिशि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल थल के दिव्य कुसुम लेकर, अर्पण है प्रभु के चरणों में।
हम काम अरि को नष्ट करें, यह भाव करें प्रभु चरणों में॥ वे रत्नमयी..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे आग्नेयदिशि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खाजा बरफी रबड़ी घेवर, लड्डु सिवैया खीर बना।
हम क्षुधा वेदनी विनशाने, हम अर्चे प्रभु को शुद्ध बना॥
वे रत्नमयी जिन प्रतिमायें, शाश्वत हैं नाना रत्नों की।
हम उन्हें यही से पूज रहे, वे अरज सुनें हर भक्तों की॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे आग्नेयदिशि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम नित्य आरती करते हैं, मिथ्यात्व तिमिर विनशाने को।
केवली सम केवलज्ञान मिले, लाये हम दीप चढ़ाने को॥ वे रत्नमयी..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे आग्नेयदिशि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम धूप अनल में खेते हैं, अपने वसु कर्म नशाने को।
अरिहंत सिद्ध को हम ध्यायें, अनुक्रम से मुक्ति पाने को॥ वे रत्नमयी..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे आग्नेयदिशि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम आम जाम केला चीकू, नारंगी मौसंबी लाये।
दाड़िम श्रीफल द्राक्षादि फल, प्रभु को अर्पे शिवसुख पायें॥ वे रत्नमयी..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे आग्नेयदिशि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पद अनर्घ के धारी हैं, अरिहंत सिद्ध श्री सुखकारी।
उन प्रभु को अर्घ चढ़ा हम भी, बन जायें सुख के अधिकारी॥ वे रत्नमयी..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे आग्नेयदिशि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आग्नेय दिशागत चैत्यालय के अर्घ

दोहा– नंदीश्वर जिन चैत्य पे, पुष्पाञ्जलि चढ़ाय।
सर्व जिनालय पूजने, सुर नंदीश्वर जाय॥

इति श्री नन्दीश्वर द्वीपे आग्नेयदिशि स्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(शंभु छंद)

रतिकर नग की मणिमय प्रतिमा, सब धनुष पाँच सौ ऊँची हैं।
आग्नेय दिशा विरजा वापी, कहती जिनवाणी सच्ची है॥
हैं रत्नमयी सब चैत्यालय, उनमें रत्नों की प्रतिमायें।
सुर किन्नर से वंदित प्रभु की, पूजा कर हम भी हर्षायें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे आग्नेयदिशि विरजा वापिका आग्नेय कोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है कनक शैल रतिकर सुन्दर, विरजा वापी नैऋत्य दिशा।
दिन-रात प्रभु को सुर पूजें, फेरी करते वो सर्व दिशा॥ है ..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे आग्नेयदिशि विरजा वापिका नैऋत्य कोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ नाम अशोका वापिका, भक्तों के शोक मिटाती है।
रतिकर की रत्नमयी प्रतिमा, नैऋत्य दिशा में आती है॥ है ..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे आग्नेयदिशि अशोका वापिका नैऋत्य कोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायव्य कोण रतिकर वापी, है नाम अशोका मनहारी।
चामी[1] नग[2] पे सुन्दर मन्दिर, उनकी पूजा मंगलकारी॥ है ..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे आग्नेयदिशि अशोका वापिका वायव्य कोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है नाम वीतशोका जिसका, वायव्य कोण के रतिकर पे।
नाना रत्नों की प्रतिमायें, जिनभक्तों को अति रुचिकर हैं॥ है ..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे आग्नेयदिशि वीतशोका वापिका वायव्य कोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कमलों से सुरभित वापिका, हे नाम वीतशोका जिसका।
ईशान दिशि विस्तृत मंदिर, वर्णन नहीं कर सकते जिसका॥ है ..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे आग्नेयदिशि वीतशोका वापिका ईशान कोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. स्वर्णमयी, 2. पर्वत।

पूर्णार्घ्य (गीता छंद)

ये आठवाँ इक द्वीप है, शुभ नाम नंदीश्वर कहा।
बावन जिनालय बिम्ब को, सुर पूजते जाकर वहाँ॥
हम भी यहाँ अर्चा करें, भक्ति से शिवसुख प्राप्त हो।
श्रद्धा उसी जिनदेव पे, जो वीतरागी आप्त हो॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे आग्नेय दिशा संबंधी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

यह द्वीप शाश्वत आठवाँ, इसकी करें हम वन्दना।
भव-भव दुःखों का नाश हो, इस हेतु करते अर्चना॥
जिनवर गुणों की प्राप्ति हित, हम शांतिधारा कर रहे।
'आस्था' करें गुप्ति धरें, पुष्पाञ्जलि हम कर रहे॥

शांतये शांतिधारा॥ दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- अंजनगिरी दधि मुख विषे, रतिकर मंदिर जान।
उनकी जयमाला पढ़ें, जो सबके भगवान॥

(नरेन्द्र छंद)

जब-जब पर्व अठाई आये, पूजा भव्य रचायें।
कार्तिक फाल्गुन षाढ़ मास में, देव द्वीप में जाये॥
हम भी प्रभु के पूजन दर्शन, करने मंदिर आये।
दर्शन का क्या फल मिलता है, आगम हमें बताये॥1॥
चिंतन जो दर्शन का करता, बेला का फल पाये।
मंदिर का उद्यम करते जब, तेला का फल पाये॥
जाने को आरम्भ करे तो, चोला का फल पाये।
मिले पाँच उपवासों का फल, घर से हम जब जाये॥2॥

कुछ दूरी जाने पर हमको, द्वादश वास बताये।
बीचोंबीच पहुँच जाने पर, पक्षोपवास बताये।।
एक मास का फल मिलता है, जब मंदिर दिख जाये।
छः महिने का फल बतलाया, आंगन जब हम जायें।।3।।
एक वर्ष का फल मिलता है, जब प्रभु द्वारा पायें।
मंदिर की फेरी करने से, शत वर्षी फल पायें।।
इक हजार उपवासों का फल, मुख दर्शन दिलवाये।
भावसहित दर्शन स्तुति से, वास अनंत बताये।।4।।
खाली हाथ न मंदिर जाये, उत्तम द्रव्य चढ़ायें।
मेढ़क प्रभु दर्शन के फल से, स्वर्गों का सुख पाये।।
तोता आम चढ़ा प्रभुवर को, दिव्य सुखों को पाये।
दर्श प्रतिज्ञा मनोवती की, पूरण देव कराये।।5।।
नयन सफल हो गये हमारे, प्रभुवर के दर्शन से।
पवित्र हो गई निज वाणी भी, प्रभुवर के कीर्त्तन से।।
हाथ जोड़ हम शीश झुकायें, पैदल मंदिर जाये।
मानव जन्म सफल हो जाता, जब जिन दर्शन पायें।।6।।
भक्ति करके नाथ तुम्हारी, हम भगवन् बन जायें।
त्रि-संध्या में एक बार तो, दर्शन प्रभु के पायें।।
जिन दर्शन से निज दर्शन हो, यही भावना भायें।
'आस्था' से प्रभु के दर्शन कर, जिन गुण संपत्त पायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे आग्नेय दिशा संबंधी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, मध्यलोक में आये।
पर्व अठाई में हम इसकी, पूजा नित्य रचायें।।
जिनवर की गुण निधियाँ पाने, 'आस्था' उर प्रगटायें।
तीन गुप्तिधर संयम पालें, सर्व सुखों को पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिश जिनालय पूजा

अथ स्थापना (दोहा)

द्वीपों में यह आठवाँ, नंदीश्वर है धाम।
दक्षिण दिश के चैत्य का, करता मैं आह्वान॥
अकृत्रिम जिनबिम्ब ये, रत्नमयी भगवान।
तेरह चैत्यालय बनें, उनको करूँ प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छंद)

प्रभुवर का अभिषेक करूँगा, बड़े-बड़े कलशों से।
वो ही न्हवन बने गंधोदक, ॐ ह्रीं मंत्रों से॥
मंत्रित उस गंधोदक को मैं, अपने शीश लगाऊँ।
नंदीश्वर के चैत्यालय की, पूजन कर हर्षाऊँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव का ताप नशाने वाला, चंदन घिसकर लाऊँ।
केशर में कर्पूर मिलाकर, प्रभु के चरण चढ़ाऊँ॥
प्रभु चरणों की पावन रज का, सिर पर तिलक लगाऊँ॥ नंदीश्वर..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

नवरंगों के माणिक मोती, रंग-बिरंगे लाऊँ।
अक्षयपद के धारी भगवन्, अक्षय पद मैं पाऊँ॥
अक्षयपद को पाने हेतु, अक्षत पुंज चढ़ाऊँ॥ नंदीश्वर..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पत्र और फूलों का मैंने, तोरणद्वार बनाया।
विविध वर्ण के गुलदस्तों से, मंदिर आज सजाया॥
पुष्पहार अर्पण कर भगवन्, काम अरि विनशाऊँ।
नंदीश्वर के चैत्यालय की, पूजन कर हर्षाऊँ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मण्डल के चारों कोने पे, इक्षुदण्ड लगाये।
कदली खंब व पुष्पमाल से, तोरणद्वार बनाये॥
पय घृत के सुस्वादु व्यञ्जन, प्रभुवर तुम्हें चढ़ाऊँ॥ नंदीश्वर..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब होता मंदिर में उत्सव, तब-तब मने दिवाली।
करें आरती नंदीश्वर की, बजा-बजा कर ताली॥
घृत कपूर के दीप जलाकर, मंदिर खूब सजाऊँ॥ नंदीश्वर..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

एक-एक चैत्यालय पे सुर, पूजन भव्य रचायें।
सुरभित धूप चढ़ाकर प्रभु को, अपने कर्म नशायें॥
नंदीश्वर के जिनबिम्बों को, घट में धूप चढ़ाऊँ॥ नंदीश्वर..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीश्वर के दक्षिण दिश में, जिनमन्दिर मनहारे।
सोने का श्रीफल लेकर के, भक्त चढ़ायें सारे॥
तेरह विध चारित को पालूँ, महामोक्ष फल पाऊँ॥ नंदीश्वर..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा के स्वामी को, अष्ट द्रव्य से पूजूँ।
भक्ति के रस में रम जाऊँ, कर्म बंध से छुटूँ॥
राग-द्वेष के द्वंद फंद से, छुटकारा मैं पाऊँ॥
नंदीश्वर के चैत्यालय की, पूजन कर हर्षाऊँ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण दिशागत चैत्यालय के अर्घ

दोहा- दक्षिण के जिन चैत्य पे, पुष्पाञ्जलि चढ़ाय।
तेरह जिनगृह पूजने, सुर नंदीश्वर जाय॥

इति श्री नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिक् स्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(अवतार छंद)

नंदीश्वर दक्षिण माय, अंजन तुंग महा।
इन्द्रादि देवगण आय, मंदिर भव्य जहाँ॥
नानाविधि लेके द्रव्य, सुरगण आते हैं।
पूजा करते अति भव्य, पुण्य कमाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अंजनगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि पूरब ज्येष्ठ, 'अरजा' वापि बहे।
वापीमधि दधिमुख श्रेष्ठ, इसपे चैत्य कहे॥ नानाविधि..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अरजावापिका मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण दिश अंजन तुंग, 'विरजा' द्रह होवे।
जिनमंदिर शिखर उतुंग, दधिमुख पे सोहे॥ नानाविधि..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि विरजावापिका मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है वापी अशोका नाम, पश्चिम दिश प्यारी।
दधिमुख ऊपर भगवान, सबको सुखकारी॥
नानाविधि लेके द्रव्य, सुरगण आते हैं।
पूजा करते अति भव्य, पुण्य कमाते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अशोकावापिका मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी गतशोका होय, उत्तर दिश अंजन।
दधिमुख पे जिनवर होय, उनको है वंदन॥ नानाविधि..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि वीतशोका वापिका मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

रतिकर पर्वत है स्वर्णमयी, औ बाह्य कोण में वापी के।
ईशान कोण में 'अरजा द्रह', जिनमंदिर है इस वापी में॥
हैं रत्नमयी सब चैत्यालय, उनमें रत्नों की प्रतिमायें।
सुर किन्नर से वंदित प्रभु की, पूजा कर हम भी हर्षायें॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अरजा वापिका ईशानकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अग्निकोण 'अरजा' वापी, रतिकर सोने सा चमक रहा।
रत्नों की जिन प्रतिमाओं से, इन्द्रों का मन भी हरष रहा॥ है..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि अरजा वापिका आग्नेय कोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)

नंदीश्वर दक्षिण अंजन गिरि, उस गिरि पे दधिमुख चार कहे।
रतिकर पर्वत विदिशाओं में, कुल पर्वत प्रभु ने आठ कहे॥

तेरह जिनमंदिर वहाँ कहें, उत्तम शिखरों पे ध्वज फहरे।
हम भी उनको निशदिन पूजें, वो भव्य जनों का चित्त हरे॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

यह द्वीप शाश्वत आठवाँ, इसकी करें हम वन्दना।
भव-भव दुःखों का नाश हो, इस हेतु करते अर्चना॥
जिनवर गुणों की प्राप्ति हित, हम शांतिधारा कर रहे।
'आस्था' करें गुप्ति धरें, पुष्पाञ्जलि हम कर रहे॥

शांतये शांतिधारा॥ दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- **कल्पवृक्ष चिंतामणि, कामधेनु भगवान।**
नंदीश्वर के नाथ का, करते हम गुणगान॥

(अडिल्ल छंद)

नंदीश्वर के बावन जिन गृह वंद्य हैं।
इन्द्रादिगण भक्ति करें अतिरम्य हैं॥
कार्तिक फागुन षाढ़ मास मन भावना।
नंदीश्वर दर्शन की करते कामना॥1॥

चार निकायों के सुर नित आते यहाँ।
पूजा करते पुण्य कमाते वो महा॥
चहुँ दिश में चारों निकाय के सुरपति।
भक्ति करके पाते वो सम्यक् मति॥2॥

पूर्व दिशा में कल्पवासी सुर पूजते।
भवनवासी सुर दक्षिण जिन को पूजते।।
व्यन्तरवासी पश्चिम में पूजा करें।
ज्योतिष सुरगण उत्तर में अर्चा करें।।3।।

प्रचुर भक्ति से नृत्य रचा फेरी करें।
अपना मुख पावन करने संस्तव करें।।
एक चित्त हो प्रभुवर की भक्ति करें।
विविध विधि से रात दिवस पूजा करें।।4।।

दो-दो प्रहर करें प्रभु की आराधना।
पौर्वाह्णिक अपराह्णिक में आराधना।।
पूर्वरात्रि पश्चिम रात्रि दो-दो घड़ी।
दिशा बदलकर पूजा करते वो बड़ी।।5।।

महाअर्चना आठ दिवस होती वहाँ।
नंदीश्वर चैत्यालय जिनप्रतिमा जहाँ।।
हम भी यहाँ से उन प्रभु की पूजा करें।
श्रद्धा से 'आस्था' मुक्ति का पथ वरे।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे दक्षिण दिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, मध्यलोक में आये।
पर्व अठाई में हम इसकी, पूजा नित्य रचायें।।
जिनवर की गुण निधियाँ पाने, 'आस्था' उर प्रगटायें।
तीन गुप्तिधर संयम पालें, सर्व सुखों को पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

नन्दीश्वर द्वीप नैऋत्य दिश जिनालय पूजा

अथ स्थापना (गीता छंद)

पूजा करें उस द्वीप की, जिसमें बड़े भगवान हैं।
भगवन् हमारे हैं वहाँ, फिर भी करें कल्याण हैं॥
उस द्वीप के सब नाथ का, आओ करें आह्वान हम।
दर्शन मिले उस द्वीप का, यह भावना हो नित्य मम॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे नैऋत्य दिशी जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

जल से पूजा हम करें, जन्म-जरा नश जाय।
प्रभुवर के गुणगान से, रिद्धि-सिद्धि मिल जाय॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे नैऋत्यदिशि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवनपति के चरण में, चंदन नित्य लगाय।
प्रभु चरणों की गंध रज, अपने शीश लगाय॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे नैऋत्यदिशि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे परमेश्वर ! हे प्रभु !, दो अक्षय सुखदान।
अक्षत से हम पूजते, पाने अक्षय धाम॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे नैऋत्यदिशि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल मोगरा केवड़ा, सेवन्ती कचनार।
पुष्प चढ़ा प्रभु के चरण, और चढ़ायें हार॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे नैऋत्यदिशि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर प्रासुक शुद्ध ले, षट् रस के पकवान।
हम प्रभुवर को अर्चते, भर-भर के पकवान॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे नैऋत्यदिशि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें आरती दीप से,उनसे भवन सजाय।
जिन प्रभुवर का ये भवन, सबका ज्ञान बढ़ाय॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे नैऋत्यदिशि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर कालागुरु, विधिवत धूप चढ़ाय।
महक उठे प्रभु का भवन, ऐसी धूप जलाय॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे नैऋत्यदिशि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल का तोरण बना, पुंगीफल ओ आम।
षड् ऋतु के हम फल चढ़ा, पाये शिव अविराम॥8॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे नैऋत्यदिशि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का थाल ले, भक्ति नृत्य रचाय।
नंदीश्वर के नाथ को, वसु विधि अर्घ चढ़ाय॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे नैऋत्यदिशि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नैऋत्य दिशागत चैत्यालय के अर्घ

दोहा- नंदीश्वर नैऋत्य दिशा, सर्व जिनालय ध्याय।
जिन चरणों में भक्ति से, पुष्पाञ्जलि चढ़ाय॥

इति श्री नन्दीश्वर द्वीपे नैऋत्यदिशि स्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(शंभु छंद)

आग्नेय दिशि 'वैजयन्ति' द्रह, रतिकर की रत्नमयी प्रतिमा।
नाना रत्नों का अर्घ बना, पूजें हम शाश्वत जिन प्रतिमा॥
जिन चैत्य चैत्यालय के स्वामी, सबको शिवसुख सिद्धी दाता।
हम भी ध्वज अर्घ चढ़ाते हैं, हे नाथ तुम्हीं हो जग त्राता॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे नैऋत्यदिशि वैजयंती वापी आग्नेयकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैजयन्ति द्रह ये नैऋत्य में, नित नव्य[1] सुखों को दिलवाये।
त्रैलोक्य तिलक रतिकर जिन से, हम भी सच्चा सुख पा जायें॥ जिन..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे नैऋत्यदिशि वैजयंती वापी नैऋत्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी जयंती नैऋत्य दिशा, है परम श्रेष्ठ सुन्दर मंदिर।
रतिकर नग पे जिनवर जितने, उनके रत्नों के जिनमंदिर॥ जिन..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे नैऋत्यदिशि जयंती वापी नैऋत्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी जयंती वायव्य दिशा, रतिकर नग रत्नों सा चमके।
जिन चैत्य अकृत्रिम बने जहाँ, वो नौ रत्नों से नित दमके॥ जिन..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे नैऋत्यदिशि जयंती वापी वायव्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपराजित द्रह वायव्य कोण, सोने का रतिकर नग प्यारा।
जिनचैत्य चैत्यालय का वैभव, देवों द्वारा पूजित सारा॥ जिन..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे नैऋत्यदिशि अपराजिता वापी वायव्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपराजित वापी रतिकर की, ईशान दिशा में कहलाये।
रतिकर की स्वयं सिद्ध प्रतिमा, रत्नों की आभा फैलाये॥ जिन..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे नैऋत्यदिशि अपराजिता वापी ईशानकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. नये।

पूर्णार्घ्य (गीता छंद)

ये आठवाँ इक द्वीप है, शुभ नाम नंदीश्वर कहा।
बावन जिनालय बिम्ब को, सुर पूजते जाकर वहाँ॥
हम भी यहाँ अर्चा करें, भक्ति से शिवसुख प्राप्त हो।
श्रद्धा उसी जिनदेव पे, जो वीतरागी आप्त हो॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे नैऋत्यदिशि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

यह द्वीप शाश्वत आठवाँ, इसकी करें हम वन्दना।
भव-भव दुःखों का नाश हो, इस हेतु करते अर्चना॥
जिनवर गुणों की प्राप्ति हित, हम शांतिधारा कर रहे।
'आस्था' करें गुप्ति धरें, पुष्पाञ्जलि हम कर रहे॥

शांतये शांतिधारा॥ दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

जयमाला

सोरठा- **बोले जय-जयकार, नंदीश्वर भगवान की।**
वंदन बारम्बार, सब जिनवर को भाव से॥

(शंभु छंद)

हे नंदीश्वर के परमेश्वर, अरिहंत सिद्ध सबके स्वामी।
कुछ कहे बिना सब कुछ कहते, केवलज्ञानी अन्तरयामी॥
जिनवर ने हमको बतलाया, आगम से हमने जाना है।
पुजायें विविध तरह होती, यह आचार्यों से जाना है॥1॥
पंचामृत जो अभिषेक करें, वो पूजा प्रथम कहाती है।
प्रभु चरणों में चंदन लेपन, ये पूजा दूजी आती है॥
जो करे जिनालय को शोभित, ये पूजा तीजी होती है।
प्रभु चरणन् पुष्प चढ़ाना भी, ये पूजा चौथी होती है॥2॥

उपवास करे मंदिर में रह, ये पंचम पूजा होती है।
जो धूप चढ़ा करते अर्चा, ये पूजा छठवी होती है।।
दीपक से पूजा करते हैं, ये अर्चा सप्तम कहलाती।
उत्तम अक्षत से जिन अर्चा, ये अष्टम पूजा मन भाती।।3।।
ताम्बुल पत्रों से जिन पूजा, ये नवमी पूजा होती है।
पुंगीफल से प्रभु की अर्चा, ये पूजा दसवीं होती है।।
नैवेद्यों से प्रभु की पूजा, ये पूजा ग्यारहवीं कहलाती।
जल से श्री जिनवर की अर्चा, बारहवीं पूजा कहलाती।।4।।
हम हरे-भरे फल से पूजें, पूजा तेरहवी होती है।
जिनवाणी को वस्त्रादि चढ़ा, चौदहवीं पूजा होती है।।
प्रभुवर को चँवर ढुराते हैं, ये पूजा पन्द्रहवीं होती।
छत्रादि चढ़ा प्रभु को यजते, ये पूजा सोलहवीं होती।।5।।
मंगल बाजे बजवाना भी, होती है सत्रहवीं पूजा।
भगवान की स्तुति करना भी, होती अठारहवीं पूजा।।
प्रभु सन्मुख नृत्य रचना भी, होती उन्नीसवीं जिनपूजा।
रंगोली स्वस्तिक आदि बना, कहलाय बीसवीं जिनपूजा।।6।।
भण्डार में द्रव्य दान देना, इक्कीसवीं पूजा होती है।
इक्कीस प्रकार की प्रभुवर की, श्रुत सम्पन्न पूजा होती है।।
हम पूजा करते जिनवर की, पूजा से प्रभु सम पद पाये।
'आस्था' अटूट हो जिनवर पर, जिन मत से कभी ना ढिग पाये।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे नैऋत्य दिशा संबंधी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, मध्यलोक में आये।
पर्व अठाई में हम इसकी, पूजा नित्य रचायें।।
जिनवर की गुण निधियाँ पाने, 'आस्था' उर प्रगटायें।
तीन गुप्तिधर संयम पालें, सर्व सुखों को पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिश जिनालय पूजा

अथ स्थापना (गीता छंद)

यह द्वीप नंदीश्वर कहा, इस द्वीप की पश्चिम दिशा।
मंदिर बने तेरह यहाँ, चारों दिशा विदिग् दिशा।।
इसके सभी जिननाथ की, हम कर रहे आराधना।
प्रभु आपके आह्वान से, हो जाय कर्म विराधना।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहा)

विपुल सुगन्धित नीर से, स्वर्ण कलश भर लाय।
सुरगण न्हवन करें प्रभु का, भारी पुण्य कमाय।।
नंदीश्वर पश्चिम दिशा, तेरह मंदिर जान।
सर्व सिद्ध को पूज हम, बन जायें भगवान।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कालागुरु कर्पूर संग, चंदन कुंकुम लाय।
इन्द्र सुगन्धित द्रव्य ले, प्रभु पद लेप कराय।। नंदीश्वर..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

कोमल निर्मल चन्द्र सम, तंदुल धवल सजाय।
प्रतिमाओं को देवगण, अक्षत पुञ्ज चढ़ाय।। नंदीश्वर..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सेवन्ती पुन्नाग संग, विविध पुष्प की माल।
माला प्रभु पद में चढ़ा, अंत वरें जयमाल॥
नंदीश्वर पश्चिम दिशा, तेरह मंदिर जान।
सर्व सिद्ध को पूज हम, बन जायें भगवान॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अद्भुत अमृत रस भरे, षट् रस व्यञ्जन थाल।
सब देवेन्द्र चढ़ा रहे, भर-भर प्रभु को थाल॥ नंदीश्वर..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कज्जल व कालुष्य बिन, रत्नदीप सुर लाय।
सुर कर प्रभु की आरती, केवलज्योति जगाय॥ नंदीश्वर..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मन्दिर में जिनबिम्ब को, सुरभित धूप चढ़ाय।
दिग् मण्डल तक देवगण, धूप गंध महकाय॥ नंदीश्वर..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नारंगी केला पनस, मातुलिंग व आम।
पके फलों से सुर भजें, प्रभु को आठों याम॥ नंदीश्वर..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नाचें चंवर ढुरा रहे, किंकिणियों संग देव।
अष्ट द्रव्य ले हाथ में, पूजें प्रभु को देव॥ नंदीश्वर..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिशागत चैत्यालय के अर्घ

दोहा- पश्चिम के जिन चैत्य पे, पुष्पाञ्जलि चढ़ाय।
तेरह जिनगृह नाथ को, मन-वचन-तन से ध्याय॥

इति श्री नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिमदिक् स्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(शंभु छंद)

यह द्वीप आठवाँ नंदीश्वर, पश्चिम दिश अंजनगिरि सोहे।
सिद्धों की रत्नमयी प्रतिमा, सुर किन्नरियों के मन मोहे॥
तेरह चैत्यालय के स्वामी, सबको शिवसुख सिद्धी दाता।
हम भी ध्वज अर्घ चढ़ाते हैं, हे नाथ तुम्हीं हो जग त्राता॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि अंजनगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरी दधिमुख पूरब में, विजयावापी कहलाती है।
दधिसम जिनगृह की पूजा को, देवों की टोली जाती है॥ तेरह..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि विजयावापी मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैजयंति वापी दक्षिण में, अंजन दधिमुख ये धवल कहा।
ये पर्वत वापी अचल सभी, जिन मंदिर भी है अचल अहा॥ तेरह..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि वैजयंती वापिका मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है वापी 'जयंती' पश्चिम में, उस वापी में कमलादि खिले।
अंजनगिरि दधिमुख जिनवर के, दर्शन से अद्भुत शांति मिले॥ तेरह..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि जयंती वापिका मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी अपराजित नीर भरी, जय-जय ध्वनि इसपे आती है।
अंजन दधिमुख उत्तर दिश की, प्रतिमायें अति मनभाती हैं॥ तेरह..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि अपराजिता वापिका मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयावापी ईशान दिशा, रतिकर गिरि पर हैं जिन प्रतिमा।
शत पाँच धनुष ऊँची मूरत, अनुपम अविनाशी ये प्रतिमा॥
तेरह चैत्यालय के स्वामी, सबको शिवसुख सिद्धी दाता।
हम भी ध्वज अर्घ चढ़ाते हैं, हे नाथ तुम्हीं हो जग त्राता॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि विजयावापी ईशानकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आग्नेय कोण विजया वापी, रतिकर पे सब जिन चैत्यालय।
इनकी परोक्ष पूजा भक्ति, भक्तों को हैं सुख का आलय॥ तेरह..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशि विजया वापी आग्नेयकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

नंदीश्वर के पश्चिम दिश में, उन्नत गिरी अंजन हैं।
वहाँ प्रतिष्ठित प्रतिमाओं का, शत्-शत् अभिवंदन हैं॥
दधिमुख पर्वत की विदिशा में, रतिकर आठ कहे हैं।
तेरह चैत्यालय को हम सब, निशदिन पूज रहे हैं॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिमदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

यह द्वीप शाश्वत आठवाँ, इसकी करें हम वन्दना।
भव-भव दुःखों का नाश हो, इस हेतु करते अर्चना॥
जिनवर गुणों की प्राप्ति हित, हम शांतिधारा कर रहे।
'आस्था' करें गुप्ति धरें, पुष्पाञ्जलि हम कर रहे॥

शांतये शांतिधारा॥ दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- **मंत्र जाप कर हम करें, जिनवर का गुणगान।**
कीर्तन से कीर्ति मिले, श्रद्धा से भगवान॥

(पद्धरि छंद)

श्री नंदीश्वर को नमस्कार, हम नमते प्रभु को बार-बार।
चैत्यालय बावन हैं महान्, रत्नों के दिव्य प्रकाशवान॥1॥
चैत्यालय चारों दिश कहाय, बहुवर्णी सब प्रतिमा सुहाय।
पद्मासन सब प्रतिमा कहाय, शत पाँच धनुष ऊँची बताय॥2॥
चऊँ दिश में अंजनगिरी चार, हर गिरि पे वापी चार-चार।
उसके चऊँ दिश दधिमुख बताय, दधिमुख दधि सम सुन्दर कहाय॥3॥
विदिशा में दो रतिकर सुहाय, सब रतिकर स्वर्णमयी बताय।
तेरह जिनमंदिर अति विशाल, हम सदा झुकायें इन्हें भाल॥4॥
इन्द्रादि देव भक्ति रचाय, सुर-किन्नरियाँ भी संग आय।
नाचत गावत बाजे बजाय, प्रभु का सुन्दर नाटक दिखाय॥5॥
जब-जब आष्टाह्निक पर्व आय, चारों निकाय सुर यजन जाय।
कार्तिक फाल्गुन आषाढ़ मास, ये शुक्ल पक्ष में पर्व खास॥6॥
अष्टम तिथि से प्रारम्भ होय, पूनम तिथि में सम्पूर्ण होय।
सुर आठ प्रहर पूजा रचाय, शुभ आठ दिवस दिन-रात ध्याय॥7॥
नंदीश्वर में सुर देव जाय, मुनि मनुज खगाधिप नहीं जाय।
हम सब परोक्ष वन्दें अपार, दर्शन दो प्रभुवर एक बार॥8॥
जिन प्रतिमाओं को नमस्कार, उन सबको वंदू बार-बार।
त्रय गुप्ति समाधि सुखद सार, 'आस्था' से पावे लोक पार॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे पश्चिम दिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, मध्यलोक में आये।
पर्व अठाई में हम इसकी, पूजा नित्य रचायें॥
जिनवर की गुण निधियाँ पाने, 'आस्था' उर प्रगटायें।
तीन गुप्तिधर संयम पालें, सर्व सुखों को पायें॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

नन्दीश्वर द्वीप वायव्य दिश जिनालय पूजा

अथ स्थापना (नरेन्द्र छंद)

नंदीश्वर अंजनगिरी रतिकर, दधिमुख की प्रतिमायें।
सुर किन्नर से पूजित जिनवर, उनकी भक्ति रचायें॥
आओं भगवन हृदय कमल में, मन मंदिर में आओ।
आह्वानन् हम करते भगवन्, हमको पार लगाओ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे वायव्यदिशि संबंधी जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छंद)

जिन प्रतिमा मंगलकारी, अभिषेक करे नर-नारी।
जन्मादिक रोग नशायें, प्रभुवर को नीर चढ़ाये॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे वायव्यदिशी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुमकुम चंदन का लेपन, प्रभुवर पे करें विलेपन।
उसका ही तिलक लगायें, हम अपना भाग्य जगाये॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे वायव्यदिशी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयनिधि के हो स्वामी, हो जिनवर ! अन्तर्यामी।
हम अक्षत पुंज चढ़ायें, अक्षय अखंड सुख पायें॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे वायव्यदिशी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की माला लायें, प्रभुवर के चरण चढ़ाये।
ऐसी जिन अर्चा गायें, हम अपना काम नशायें॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे वायव्यदिशी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डु बरफी सेवैय्या, पकवान बनाये मैय्या।
प्रभू को पकवान चढ़ायें, हम अपनी क्षुधा नशाये॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे वायव्यदिशी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम करें आरती प्रभु की, अकृत्रिम बिम्ब विभू की।
दीपार्चा ज्ञान दिलाये, प्रभु आरती मोह नशाये॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे वायव्यदिशी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सुरभित धूप जलायें, कर्मों की धूल उड़ायें।
हम ऐसी शक्ति पायें, भक्ति से मुक्ति पायें॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे वायव्यदिशी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगुर सेव नारंगी, चीकू केला मौसंबी।
हम फल की थाल चढ़ाये, प्रभु की जयकार लगाये॥8॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे वायव्यदिशी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

विधिवत हम अर्घ चढ़ाये, प्रभुवर को हृदय बसाये।
जिन वीतरागी को ध्यायें, अन्यत्र ना शीश झुकाये॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे वायव्यदिशी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायव्य दिशागत चैत्यालय के अर्घ

दोहा– नंदीश्वर वायव दिशी, जिन निकेत मन भाय।
विविध पुष्प ले हाथ में, पुष्पाञ्जलि चढ़ाय॥

इति श्री नन्दीश्वर द्वीपे वायव्य दिशी मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(रोला छंद)

'रमणीया' ह्रद रम्य, अग्नि दिशा में आये।
रतिकर नग अतिरम्य, सुरगण वाद्य बजायें॥
नंदीश्वर में मात्र, देव-देवियाँ जाते।
हम परोक्ष में पूज, उनको अर्घ चढ़ाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे वायव्यदिशि रमणीयावापी आग्नेयकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रह 'रमणीया' भव्य, रतिकर रत्नों वाला।
नैऋत्य जिनग्रह मध्य, रंग-बिरंगी माला॥ नंदीश्वर..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे वायव्यदिशि रमणीया वापी नैऋत्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुप्रभ द्रह नैऋत्य, रतिकर नग जिनदेवा।
चौंसठ चँवर ढुँराय, लाये सुर चंदेवा॥ नंदीश्वर..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे वायव्यदिशि सुप्रभा वापी नैऋत्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुप्रभ वायव्य कोण, है रतिकर नग वापी।
हम इस विध जिन ध्याय, ना हो जन्म कदापि॥ नंदीश्वर..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे वायव्यदिशि सुप्रभावापी वायव्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापि सर्वतोभद्र, रतिकर स्वर्ण समाना।
वायव के जिन चैत्य, देते पुण्य खजाना॥ नंदीश्वर..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे वायव्यदिशि सर्वतोभद्रावापी वायव्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनगृह शाश्वत रम्य, अविचल हैं प्रतिमायें।
वापि सर्वतोभद्र, रतिकर रम्य बतायें॥ नंदीश्वर..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे वायव्यदिशि सर्वतोभद्रा वापी ईशानकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (गीता छंद)

ये आठवाँ इक द्वीप है, शुभ नाम नंदीश्वर कहा।
बावन जिनालय बिम्ब को, सुर पूजते जाकर वहाँ॥
हम भी यहाँ अर्चा करें, भक्ति से शिवसुख प्राप्त हो।
श्रद्धा उसी जिनदेव पे, जो वीतरागी आप्त हो॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे वायव्य दिशी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

यह द्वीप शाश्वत आठवाँ, इसकी करें हम वन्दना।
भव-भव दुःखों का नाश हो, इस हेतु करते अर्चना॥
जिनवर गुणों की प्राप्ति हित, हम शांतिधारा कर रहे।
'आस्था' करें गुप्ति धरें, पुष्पाञ्जलि हम कर रहे॥

शांतये शांतिधारा॥ दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- **जयमाला जिन नाथ की, पढ़े सुने जो कोय।**
उनकी भी जय अवश हो, जो जिन पूजक होय॥

(शंभु छंद)

जय जय परमेश्वर परम पिता, जयमाला अब हम गाते हैं।
हे नाथ ! आपके गुण अनंत, हम कुछ भी गाना पाते हैं॥
भूले ना प्रभुवर हम तुमको, सुख दुःख दोनों ही घड़ियों में।
हम भक्त सदा ही बने रहें, छुटे कर्मों की कड़ियों से॥1॥

सच्ची श्रद्धा से है जिनवर, इक बार भी तुमको ना ध्याया।
ना मंत्र जपा ना पूजा की, ना ध्यान हृदय से कर पाया॥
माला जपने भी बैठे तो, मन इधर-उधर ही घूम रहा।
जैसे ही आँखें बंद करी, निद्रा में पूरा झूल रहा॥2॥

श्रावक के षट् कर्त्तव्य प्रभु, हम पूरा कभी न कर पाये।
श्रुत सन्मुख भी निंदा करते, पूजा करते लड़-भिड़ जाये॥
गुरूओं की सेवा करी नहीं, तप संयम को हमने छोड़ा।
व्रत नियम नहीं पलते हमसे, यह कहकर सब कुछ ही छोड़ा॥3॥

जिन कुल में आकर के भी हम, उसके नियमों को ना पाले।
ये नियम पालना कठिन लगे, फिर मुक्ति वधु कैसे पाले॥
अब रात्रि भोजन त्याग करें, और छना पानी ही नित्य पियें।
जिनवर के दर्शन नित्य करें, बनकर जिन भक्त विशेष जियें॥4॥

ऐसी बुद्धि दो हे भगवन, हम प्रतिदिन जिन अभिषेक करें।
प्रभु पूजा व आहार देय, हम अपना जीवन धन्य करें॥
तीनों अठाई में आठ दिवस, व्रत संयम को हम अपनायें।
करते विधान नंदीश्वर का, 'आस्था' धर हम भव तिर जायें॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे वायव्यदिशा जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, मध्यलोक में आये।
पर्व अठाई में हम इसकी, पूजा नित्य रचायें॥
जिनवर की गुण निधियाँ पाने, 'आस्था' उर प्रगटायें।
तीन गुप्तिधर संयम पालें, सर्व सुखों को पायें॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

नन्दीश्वर द्वीप उत्तर दिश जिनालय पूजा

अथ स्थापना (नरेन्द्र छंद)

नंदीश्वर के जिनभवनों में, प्रतिमा रत्नमयी हैं।
इन्द्रनील मणियों के पर्वत, कोई स्वर्णमयी हैं।।
अंजन दधिमुख रतिकर नग में, शाश्वत त्रिभुवन स्वामी।
करने हम आह्वान निरन्तर, हृदय विराजो स्वामी।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिक् संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज- दीप अढ़ाई सरस...)

कलश में नीर भर लाये, प्रभु को पूजने आये।
जरादिक रोग विनशायें, क्षायिक सौख्य हम पायें।।
आठवाँ द्वीप कहलाये, वहाँ की उत्तर दिश ध्यायें।
त्रयोदश मंदिर हम ध्यायें, सुखों की सम्पदा पायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगन्धित गंध मनहारा, मिला प्रभु का सुखद द्वारा।
चढ़ायें गंध हम सारा, मिले पापों से छुटकारा।। आठवाँ..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र सम रत्न हम लाये, धवल अक्षत सजा लाये।
प्रभु की अर्चना गायें, परम पद प्राप्त हो जाये।। आठवाँ..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचरंगी सुमन लायें, पंच पापों को विनशायें।
प्रभु पद पुष्प हम लाये, काम का मद उतर जाये॥
आठवाँ द्वीप कहलाये, वहाँ की उत्तर दिश ध्यायें।
त्रयोदश मंदिर हम ध्यायें, सुखों की सम्पदा पायें॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सताये ये क्षुधा भारी, लगी दिन-रात बीमारी।
लिये मिष्ठान्न नर-नारी, करें पूजा बड़ी भारी॥ आठवाँ..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमय दीप की थाली, लगे जैसे हो दीवाली।
प्रभु की अर्चना आली, चढ़ायें दीप की थाली॥ आठवाँ..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप घट गंध फैलाये, भाव दूषण विनश जाये।
भक्त भगवान को ध्यायें, जलाने कर्म हम आये॥ आठवाँ..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

संतरा आम वा केला, चढ़ाये भक्त अलेबला।
लगा प्रभु द्वार पे मेला, आ गया पर्व अलबेला॥ आठवाँ..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्त भक्ति में रंग जायें, प्रभु का संग मिल जाये।
प्रभु के द्वार पे आये, चढ़ाने अर्घ हम लाये॥ आठवाँ..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिशागत चैत्यालय के अर्घ

दोहा- उत्तर के जिनबिम्ब पे, सुन्दर पुष्प चढ़ाय।
तेरह जिनगृह चैत्य को, मन-वच-तन से ध्याय॥

इति श्री नन्दीश्वर द्वीपे उत्तरदिक् स्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

शेर छंद (हे दीन बंधु श्रीपति...)

तेरह सदन बने यहाँ, जिनदेव के महान्।
पूजा से पूज्य पद मिले, ये माँगते वरदान॥
अंजनगिरि उत्तर दिशा में, चमचमा रही।
पूजा करें जिनराज की, यह मन को भा रही॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि अंजनगिरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि पूरब दिशी, रम्या सुवापिका।
तल्लीन हो जिनभक्त पायें, धर्म की शिखा॥ अंजनगिरि..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापी मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि दक्षिण दिशी, रमणीया वापिया।
पूजा करें तीर्थेश की, सुर देव-देवियाँ॥ अंजनगिरि..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि रमणीया वापी मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिशा अंजन गिरि की वापी 'सुप्रभा'।
दधिमुख के जिनभवन की, हमें मिल रही प्रभा॥ अंजनगिरि..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि सुप्रभावापी मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रह सर्वतोभद्रा सरस, उत्तर दिशा में है।
अंजन दधिमुख मध्य में, जिनचैत्य बने हैं॥ अंजनगिरि..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि सर्वतोभद्रावापी मध्य दधिमुख पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रोला छंद)

रम्या द्रह ईशान, रतिकर स्वर्णमयी है।
इनमें जिन भगवान, प्रतिमा रत्नमयी है॥
नंदीश्वर में मात्र, देव-देवियाँ जाते।
हम परोक्ष में पूज, उनको अर्घ चढ़ाते॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापी ईशानकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापि 'रम्या' श्रेष्ठ, दिश आग्नेय कहाती।
रतिकर आलय श्रेष्ठ, देव जातियाँ जाती॥ नंदीश्वर..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशि रम्यावापी आग्नेयकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद)

द्वीप आठवाँ नंदीश्वर ये, उत्तर दिश सुखकारी।
रतिकर दधिमुख अंजनगिरि के, मन्दिर मंगलकारी॥
तेरह जिन चैत्यालय को हम, अर्घ पवित्र चढ़ायें।
उनके शाश्वत जिनबिम्बों को, हम सब शीश झुकायें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तरदिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

यह द्वीप शाश्वत आठवाँ, इसकी करें हम वन्दना।
भव-भव दुःखों का नाश हो, इस हेतु करते अर्चना॥
जिनवर गुणों की प्राप्ति हित, हम शांतिधारा कर रहे।
'आस्था' करें गुप्ति धरें, पुष्पाञ्जलि हम कर रहे॥

शांतये शांतिधारा॥ दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

जयमाला

(धत्ता छन्द)

नंदीश्वर स्वामी, हे जगनामी, बावन चैत्यालय की जय।
जयमाल तिहारी, है सुखकारी, देती है हर भव में जय॥

(दोहा)

नंदीश्वर शुभ द्वीप की, जयमाला सुखकार।
द्वीप आठवें के प्रभु, तुम हो मंगलकार॥1॥
तेरह चैत्यालय कहें, उत्तर दिश के माय।
प्रभू को प्रत्यक्ष पूजने, सुरगण आदि जाय॥2॥
मंत्र जाप पूजा करें, कीर्तन पाठ कराय।
नृत्य गान संस्तव सुखद, आठों याम रचाय॥3॥
प्रभु नाम के मंत्र से, होवे पाप विनाश।
सिद्ध प्रभु के जाप से, पहुँचे प्रभु के पास॥4॥
मंत्र जाप के अंत में, स्वाहा शब्द सुहाय।
स्वाहा विद्या वाच्य है, विद्या ज्ञान बढ़ाय॥5॥
स्वाहा बिन गर जाप हो, मंत्र रूप कहलाय।
मंत्रों की शक्ति अति, संकट दूर कराय॥6॥
करें आरती भक्ति से, दीपावली सजाय।
रत्नों के उस चैत्य को, दीपों से चमकाय॥7॥
चारों दिश में घूमकर, फेरी नित्य लगाय।
अंजन दधिमुख चैत्य पे, रतिकर पे सुर जाय॥8॥
विद्याधर नर नारी वा, ऋद्धिधर मुनिराय।
इस नंदीश्वर द्वीप में, मनुज कभी ना जाय॥9॥
हम भक्ति करते प्रभु, दो ऐसा वरदान।
हम भी सिद्ध समान हो, दर्शन दो भगवान॥10॥

प्रभुवर की आराधना, गुप्ति व्रतों के साथ।
जिनवर पे 'आस्था' बढ़े, सदा झुकायें माथ॥11॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे उत्तर दिशा संबंधी त्रयोदश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, मध्यलोक में आये।
पर्व अठाई में हम इसकी, पूजा नित्य रचायें॥
जिनवर की गुण निधियाँ पाने, 'आस्था' उर प्रगटायें।
तीन गुप्तिधर संयम पालें, सर्व सुखों को पायें॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

नन्दीश्वर द्वीप ईशान दिश जिनालय पूजा

अथ स्थापना (गीता छंद)

ये द्वीप नंदीश्वर जिनालय, आठवाँ मंगल करें।
श्री पूर्व दिशि के चैत्य सब, मंगल करें दंगल हरे॥
ले हाथ में बहु पुष्प हम, आह्वान संस्थापन करें।
सब रत्नमय जिनबिम्ब का, पूजन भजन कीर्तन करें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे ईशानदिशी जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अवतार छंद)

हम लाय कलश में नीर, मंगल नदियों का।
प्रभु हरो हमारी पीर, भव दुःख सदियों का॥
नंदीश्वर द्वीप विशाल, सर्व दिशी प्यारी।
लेकर पूजन की थाल, पूजें नर-नारी॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे ईशानदिशी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिमायें ऊँची कहाय, रत्नमयी सुन्दर।
प्रभु पद सुर गंध चढ़ाय, प्रभु लगते सुन्दर॥
नंदीश्वर द्वीप विशाल, सर्व दिशी प्यारी।
लेकर पूजन की थाल, पूजें नर-नारी॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे ईशानदिशी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल धवलाक्षत लाय, हम सब भक्ति से।
पूजें हम प्रभु के पाय, मन वच शक्ति से॥ नंदीश्वर..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे ईशानदिशी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम लेय बाग के पुष्प, पूजा करने को।
प्रभु चरण चढ़ाये पुष्प, सब सुख वरने को॥ नंदीश्वर..॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे ईशानदिशी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान बनाकर शुद्ध, प्रभु को हम पूजें।
कट जाये कर्म अशुद्ध, प्रभु को जो पूजें॥ नंदीश्वर..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे ईशानदिशी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों के सुन्दर दीप, चम-चम करते हैं।
पाने हम ज्ञान प्रदीप, आरती करते हैं॥ नंदीश्वर..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे ईशानदिशी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरगण नंदीश्वर जाय, धूप चढ़ाते हैं।
वो अतिशय पुण्य कमाय, प्रभु को ध्याते हैं॥ नंदीश्वर..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे ईशानदिशी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला मौसंबी आम, जामादिक चेरी।
हम पाये प्रभु शिव धाम, पूजा कर तेरी॥
नंदीश्वर द्वीप विशाल, सर्व दिशी प्यारी।
लेकर पूजन की थाल, पूजें नर-नारी॥8॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे ईशानदिशी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन आदि अर्घ, अर्पण है प्रभु को।
हम पाये सौख्य अनर्घ, वंदन है तुम को ॥ नंदीश्वर..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपे ईशानदिशी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईशान दिशागत चैत्यालय के अर्घ

दोहा- नंदीश्वर के नाथ को, पूजूँ मन-वच-काय।
अकृत्रिम जिनचैत्य को, पुष्पाञ्जलि चढ़ाय॥

इति श्री नन्दीश्वर द्वीपे ईशानदिशी स्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(अडिल्ल छंद)

अग्निकोण में 'नंदवती' वापी कही।
रतिकर पे जिनमंदिर रत्नमणी मयी॥
लोकपूज्य तहँ सिद्ध बुद्ध परमात्मा।
उनको पूजें बनने हम सिद्धात्मा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे ईशानदिशी नंदवती वापी आग्नेयकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नंदवती' द्रह नैऋत्य कोण सुहावनी।
नाना रत्नों की प्रतिमा मन भावनी॥
उन्हें पूजनेआते नित सुर देवता।
निज समकित को दृढ़ करते वे देवता॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे ईशानदिशी नंदावापी नैऋत्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदोत्तर वापी पे रतिकर तुंग है।
नैऋत्य दिश में जिन प्रतिमायें तुंग हैं।।
सुर वनितायें मंगल नृत्य वहाँ करें।
अर्घ चढ़ा प्रभु को हम भी शिवसुख वरें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे ईशानदिशी नंदोत्तरावापी नैऋत्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार निकायों के सुर नित आते यहाँ।
चँवर ढुरायें भक्ति रचायें वो अहा।।
पवन दिशा में वापी है नंदोत्तरा।
अर्घ चढ़ायें हे भगवन् ! हमको तिरा।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे ईशानदिशी नंदोत्तरावापी वायव्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पवन दिशा में नंदीघोषा वापिका।
कमल वनों से शोभित हर इक वाटिका।।
वज्रमयी ये पर्वत नीचे गोल हैं।
प्रभु पूजा में भक्त बजाते ढ़ोल हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे ईशानदिशी नंदिघोषावापी वायव्यकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीघोषा वापी है ईशान में।
रतिकर नग पे बड़े-बड़े भगवान हैं।।
शाश्वत अनुपम जिनमंदिर मन भा रहे।
पूजा करने हम जिनमंदिर जा रहे।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे ईशानदिशी नंदिघोषावापी ईशानकोणे रतिकर पर्वत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (गीता छंद)

ये आठवाँ इक द्वीप है, शुभ नाम नंदीश्वर कहा।
बावन जिनालय बिम्ब को, सुर पूजते जाकर वहाँ।।

हम भी यहाँ अर्चा करें, भक्ति से शिवसुख प्राप्त हो।
श्रद्धा उसी जिनदेव पे, जो वीतरागी आप्त हो॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे ईशानदिशी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

यह द्वीप शाश्वत आठवाँ, इसकी करें हम वन्दना।
भव-भव दुःखों का नाश हो, इस हेतु करते अर्चना॥
जिनवर गुणों की प्राप्ति हित, हम शांतिधारा कर रहे।
'आस्था' करें गुप्ति धरें, पुष्पाञ्जलि हम कर रहे॥

शांतये शांतिधारा॥ दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा- पूरब उत्तर मध्य की, दिशा ईशान कहाय।
वहाँ बनें जिनचैत्य की, जयमाला भवि गाय॥

(अडिल्ल छंद)

नंदीश्वर के चैत्यालय को है नमन।
सब प्रतिमा को करते हम नित-नित नमन॥
सब चैत्यालय की प्रतिमायें हैं बढ़ी।
पूजा करने देवों की सेना खड़ी॥1॥
हर प्रतिमा के सन्मुख मंगल द्रव्य है।
इक सौ आठ गुरु उनकी संख्या कहे॥
प्रातिहार्य भी उतने ही जिनवर कहे।
चौषट् चँवर सदा प्रभुवर पर ढूँढ़ रहे॥2॥
सब मंदिर में सुन्दर तोरण द्वार हैं।
सुन्दर फनुसों से लगते मनहार वे॥

चैत्यालय में चित्र बने जिनदेव के।
शोभा है चैत्यों की श्री जिनदेव से।।3।।
इक वर्ष में तीन बार सुर जा रहे।
पूजा भव्य रचा वे पुण्य कमा रहे।।
आठों याम प्रभु की पूजा वो करे।
ऐसी जिन पूजा से समकित गुण वरें।।4।।
हम परोक्ष में प्रभुवर की पूजा करें।
नंदीश्वर के श्री जिनवर भवदुःख हरें।।
आठों कर्म नशाने करते अर्चना।
'आस्था' से है कोटी-कोटी वंदना।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे ईशान दिशी जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, मध्यलोक में आये।
पर्व अठाई में हम इसकी, पूजा नित्य रचायें।।
जिनवर की गुण निधियाँ पाने, 'आस्था' उर प्रगटायें।
तीन गुप्तिधर संयम पालें, सर्व सुखों को पायें।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

समुच्चय मंत्र :- (1) ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर संज्ञाय नमः।
(2) ॐ ह्रीं श्री अष्टमहाविभूति संज्ञाय नमः।
(3) ॐ ह्रीं श्री त्रिलोकसार संज्ञाय नमः।
(4) ॐ ह्रीं श्री चतुर्मुख संज्ञाय नमः।
(5) ॐ ह्रीं श्री पञ्चमहालक्षण संज्ञाय नमः।
(6) ॐ ह्रीं श्री स्वर्ग सोपान संज्ञाय नमः।
(7) ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्र संज्ञाय नमः।
(8) ॐ ह्रीं श्री इन्द्रध्वज संज्ञाय नमः।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपस्थ द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें)

समुच्चय जयमाला

दोहा- श्री नंदीश्वर द्वीप में, बावन जिनगृह माल।
उनकी जयमाला पढ़ें, भरकर श्रीफल थाल॥

(नरेन्द्र छंद)

द्वीप आठवें नंदीश्वर की, जयमाला हम गायें।
बावन जिन चैत्यालय को हम, झुक-झुक शीश नवायें॥
बड़े पुण्य से नंदीश्वर के, दर्शन सुरपति पायें।
सर्व देव-देवी भी आकर, अतिशय भक्ति रचायें॥1॥

प्रथम[1] इन्द्र हस्ती पे चढ़कर, कर में श्रीफल लाये।
ईशानेन्द्र गजारूढ़ होकर, पूंगीफल भर लाये॥
सनत इन्द्र सिंह पे आरूढ़ हो, आम्र गुच्छ फल लाये।
इन्द्र महेन्द्र अश्व पे चढ़कर, केले लेकर जायें॥2॥

श्री ब्रह्मेन्द्र हंस आरूढ़ हो, पुष्प केतकी लाये।
क्रोंच पक्षी आरूढ़ ब्रह्मोत्तर, कमल हाथ में लाये॥
श्री शुकेन्द्र चढ़े चकवा पर, पुष्प हाथ में लाये।
तोता पे महाशुक्र इन्द्र चढ़, फूलमाल ले आये॥3॥

श्री शतार सुर कोयल पे चढ़, नीलकमल ले आये।
सहस्रार सुर चले गरुड़ पे, फल अनार कर लाये॥
आनत सुरपति विहगाधिप चढ़, पनस गुच्छ फल लाये।
प्राणत सुरपति तुम्बरु फल ले, पद्म यान से आये॥4॥

1. पहला (सौधर्म)

गन्ने लेकर आरणेन्द्र भी, कुमुद यान से आये।
चँवर हाथ ले अच्युतेन्द्र भी, मयूर यान से आये॥
भवनवासी, व्यन्तर ज्योतिष सुर, निज वाहन पर जायें।
मालाएँ पुष्पों की ले वे, विविध फलों को लायें॥5॥

यहाँ अखण्डित आठ दिनों तक, सुरपति भक्ति रचायें।
आठों याम प्रभु को पूजें, द्रव्य अनेक चढ़ायें॥
मनुज और ऋद्धिधर मुनिवर, वहाँ नहीं जा पायें।
वंदन पूजन कर परोक्ष से, हम सब पुण्य कमायें॥6॥

श्रीमत् सिद्ध जिनेश्वर भगवन्, सर्व सिद्धियाँ देते।
जिनभक्तों की संकट पीड़ा, श्री जिनवर हर लेते॥
मंगलकारी जिनपूजा ये, हमको शांति दिलाये।
यही कामना एक हमारी, नित जिन भक्ति रचायें॥7॥

हे प्रभु ! हम सब बनें पुजारी, तव समान पद पाने।
कर्म शृंखला के बंधन को, आये आज नशाने॥
करो नाथ कल्याण हमारा, समिति गुप्ति हम धारें।
दृढ़ 'आस्था' ही हर प्राणी को, भव से पार उतारे॥8॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीपे चतुर्दिक संबंधि द्वि-पंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

नन्दीश्वर ये द्वीप आठवाँ, मध्यलोक में आये।
पर्व अठाई में हम इसकी, पूजा नित्य रचायें॥
जिनवर की गुण निधियाँ पाने, 'आस्था' उर प्रगटायें।
तीन गुप्तिधर संयम पालें, सर्व सुखों को पायें॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

प्रशस्ति

(अडिल्ल छंद)

आदि शांति श्री पार्श्व वीर को है नमन।
देव-शास्त्र-गुरु तीनों को शत्-शत् नमन॥
परमेष्ठी पाँचों को मेरा है नमन।
कुंथु कनक गुप्तिनंदी गुरु को नमन॥1॥

श्रुतपंचमी गुरु पुष्यामृत शुभ योग में।
नंदीश्वर का पाठ लिखा उस योग में॥
पच्चीस सौ चालीस वीर निर्वाण था।
दो हजार सन् तेरह व गुरुवार था॥2॥

प्रभु भक्ति में कलम सदा चलती रहे।
गुरुओं का आशीष सदा मिलता रहे॥
छंद शब्द व मात्रा का ना ज्ञान है।
भक्ति के वश मैंने लिखा विधान ये॥3॥

(दोहा)

वसुधा पे जब तक रहे, सूरज चंदा आग।
तब तक रहे विधान यह, जागे मेरा भाग्य॥
जिनगुण सम्पत् प्राप्त हो, 'आस्था' को दो दान।
तीन गुप्ति चारित्र धर, बनूँ सिद्ध भगवान॥4॥

॥ इति अलम्॥

आरती

(तर्ज - माईन माईन....)

नंदीश्वर के श्री विधान की, आरती मंगल गायें।
बावन जिन चैत्यालय की हम, आरती करने आये।।
बोलो नंदीश्वर की जय, बोलो सब जिनवर की जय

1. द्वीप आठवाँ नंदीश्वर ये, रत्नमयी मनहारी।
ऊँची-ऊँची इसमें प्रतिमा, रंग-बिरंगी प्यारी।।
स्वयं सिद्ध भगवन् ये सारे-2, इनको सुरगण ध्यायें।
बावन जिन.....

2. अंजनगिरि रतिकर दधिमुख ये, पर्वत मणियों वाले।
अलग-अलग हैं यहाँ वापियाँ, मन्दिर रत्नों वाले।।
अकृत्रिम जिनबिम्बों की हम-2, गुण गाथा को गायें।
बावन जिन.....

3. अलग-अलग मन्दिर में प्रतिमा, इक सौ आठ कहीं हैं।
पाँच शतक धनु ऊँची प्रतिमा, सारी रत्नमयी हैं।।
प्रभुवर सारे मंगल करते-2, अतिशय जिन दिखलायें।
बावन जिन.....

4. सर्व सुरासुर आठ दिवस तक, नंदीश्वर में जाते।
करें निरन्तर पूजा भक्ति, फेरी नित्य लगाते।।
हम भी 'आस्था' करते प्रभु पे-2, शीघ्र सुदर्शन पायें।
बावन जिन.....

***

समुच्चय अर्घ

(शेर छंद)

मैं पूजता अरिहंत सिद्ध सूरि को सदा।
उवज्झाय सर्व साधु और शारदा मुदा।।
गणधर गुरु चरण की नित्य अर्चना करूँ।
दश धर्म सोलह भावना की अर्चना करूँ।।1।।

अरहंत भाषितार्थ दया धर्म को भजूँ।
श्री तीन रत्न रूप मोक्ष धर्म को जजूँ।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य को ध्याऊँ।
चैत्यालयों का ध्यान लगा अर्घ चढ़ाऊँ।।2।।

सब सिद्ध क्षेत्र तीर्थ क्षेत्र को भजूँ सदा।
औ तीन लोक के समस्त तीर्थ सर्वदा।।
चौबीस जिनवरों व बीस नाथ को ध्याऊँ।
जल आदि अष्ट द्रव्य ले पूर्णार्घ चढ़ाऊँ।।3।।

दोहा : जल आदिक वसु द्रव्य की, लेकर आये थाल।
महाअर्घ अर्पण करें, प्रभु को नमें त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं द्रव्य सहित भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकाल वंदना करे करावै भावना भावै श्री अरहंतसिद्ध आचार्य उपाध्यायसर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। जल, थल, आकाश, गुफा, पहाड़, सरोवर, नगर-नगरी, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। पाँच भरत पाँच ऐरावत संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप

संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरू संबंधी अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाशगिरी, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, मथुरा, गजपंथा, मांगीतुंगी, तपोभूमि आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, देवगढ़, चंदेरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, कुंथुगिरी, पुष्पगिरी, अंजनगिरी, धर्मतीर्थ, वरूर,राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीरजी, पदमपुरा, तिजारा, अहिच्क्षेत्र, कचनेर, जटवाड़ा, पैठण, गोम्मटेश्वर, चंवलेश्वर, बिजौलिया, चांदखेड़ी, पाटन, कुण्डलपुर, अणिन्दा वृषभदेव णमोकार ऋषि तीर्थ आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः। भूत-भविष्यत-वर्तमान काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपावंतं श्री वृषभादि महावीरपर्यंतं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे..... प्रान्ते-नगरे..... मासानांमासे.....मासे.....पक्षे.....तिथौ.....वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावक श्राविकाणां, क्षुल्लक, क्षुल्लिकानां, सकल कर्मक्षयार्थं (जलधारा) जलादि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(27 श्वासोच्छवास में 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

शांतिपाठ (हिन्दी)

चौपाई

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पाञ्जलि क्षेपण करते रहें)

शशि सम निर्मल जिन मुखधारी, शील सहस्र गुणों के धारी।
लक्षण वसु शत त्रयपदधारी, कमल नयन शांति सुखकारी॥1॥

(नोट-यहाँ शांतिधारा करें।)

शांतिनाथ पंचम चक्रीश्वर, पूजें तुमको इन्द्र मुनीश्वर।
शांति करो हे शांति ! जिनेश्वर, जगत् शांतिहित नमते गणधर॥2॥
आठों प्रातिहार्य मनहारी, ये जिन वैभव हैं सुखकारी।
तरु अशोक पुष्पों की वर्षा, दिव्य ध्वनि सिंहासन रवि सा॥3॥

छत्र चँवर भामंडल चम-चम, देव-दुंदुभि बजती दुम-दुम।
शांति करो त्रय जग में स्वामी, शीश झुकाता तुमको स्वामी॥4॥
आप अनंत चतुष्टय धारी, मंगल द्रव्य आठ अघहारी।
सर्व विघ्न प्रभु आप नशाओं, हे शांति प्रभु ! शांति दिलाओ॥5॥
पूजक राजा शांति पायें, मुनि तपस्वी शांति पायें।
राष्ट्र नगर में शांति छाये, शांति जगत् में हे जिन ! आये॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

(दोनों हाथ में चावल या पुष्प लेकर करबद्ध हो विसर्जन पाठ पढ़ें मंत्र के साथ पुष्पाञ्जलि करें)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

जाने अनजाने हुई, प्रभु पूजा में चूक।
मैं अज्ञान अबोध हूँ, क्षमा करो सब चूक॥1॥
जानूँ नहीं आह्वान मैं, पूजा से अनजान।
ज्ञान विसर्जन का नहीं, क्षमा करो भगवान॥2॥
अक्षर पद और मात्रा, व्यंजनादि सब शब्द।
कम ज्यादा कुछ कह दिया, छूट गये हों शब्द॥3॥
मिथ्या हो सब दोष मम, शरण रखो भगवान।
तव पूजा करके प्रभु, बन जाऊँ भगवान॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् नित्य पूजाभिषेक विधाने आगच्छत सर्वे देवाः स्वस्थाने गच्छतः-3जः-3स्वाहा।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(9 बार णमोकार का जाप करें।)

(नोट-दीपक लेकर श्रीजी की मंगल आरती करें।)

(यह दोहा बोलते हुए आशिका ग्रहण करें)

दोहा : गंध पुष्प प्रभु रज यही, इसको शीश झुकाय।
पुष्प लिये आह्वान के, अपने शीश लगाय॥

(तुभ्यम् नमस्ति बोलते हुये भगवान को गुरु को नमस्कार करें।)

***